दो पाटन के बीच

भवानीशंकर व्यास 'विनोद'
गौरीशंकर आचार्य 'अरुण'

□ कल्पना प्रकाशन, बीकानेर

प्रकाशकीय

प्रस्तुत सकलन में राजस्थान के दो लब्ध प्रतिष्ठ कवियो की समस्त रचनाए एक साथ सग्रहीत की गई हैं। उपन्यास के क्षेत्र मे तो ऐसे प्रयास यत्र तत्र हुई हैं पर काव्य के क्षेत्र म दो सकलन कवियो की समस्त प्रतिनिधि रचनाए एक साथ प्रकाशित करने का सम्भवत यह प्रथम प्रयास ही है।

श्री भवानीशकर व्यास विनोद' ने जहा हास्य एव व्यग्य के क्षेत्र मे अपना विशिष्ट स्थान बनाया है वहा शब्द शिल्पी श्री गौरीशकर आचाय अरुण की रचनाए राष्ट्रीय स्तर पर निकलने वाले काव्य-सग्रहो मे सम्मिलित की जाती हैं तथा यदा-कदा रेडियो कायक्रमा मे उद्धृत होती रहती हैं। विनोदजी की रचनाओ मे हास्य के साथ प्रखर व्यग्य है तो अरुण जी की कविताए सामाजिक परिवतन के लिए सशक्त एव सायक स्वर प्रदान करती हैं। दोनो की विशेषताए एव उपलब्धिया भिन्न-भिन्न होते हुए भी व्यक्तिगत एव साहित्यिक जीवन म वे अभिन्न रहे हैं तथा कल्पना प्रकाशन ने इस 'अभिन्नता' को ही और अधिक उजागर किया है।

दोनो कवियो ने अब तक हजारो पाठक एव श्रोता तैयार किये हैं। कल्पना प्रकाशन उन सभी साहित्यानुरागी पाठको व श्रोताओ के हाथो मे यह सकलन प्रस्तुत करते हुए गौरवान्वित हो रहा है। आशा है कि हमारे अन्य प्रकाशनो की तरह इस पुस्तक को भी अपूव सहयोग मिलेगा।

इस अवसर पर मैं सवश्री रामदेव आचाय मित्रराज छगाणी जगदीश उज्ज्वल, धनञ्जय वर्मा एव पकज गोस्वामी को उनके सहयोग एव मागदशन के लिए धन्यवाद देता हूँ।

—कृष्ण जनसेवी

श्री गौरीशकर आचाय 'अरुण'

जन्म—६ जुलाई १६३८

शिक्षा—राजस्थान विश्वविद्यालय से
एम ए (हिन्दी)

प्रकाशन—(अ) आशा (काव्य-सग्रह)
कटते कगार (राजस्थानी अनुवाद)
(आ) पत्र-पत्रिकाओ मे निरन्तर प्रकाशन
(इ) काका हाथरसी द्वारा सपादित 'हस गुल्ले' म रचनाओ का सकलन
(ई) 'विजय हमारी है' एव 'सवदन इति' नामक सकलना म सम्मिलित

सम्प्रति—राजस्थान शिक्षा विभाग के अधीनस्थ अध्यापन ।



□ दो पाटन के बीच

प्रकाशक □ कल्पना प्रकाशन, कृष्णकुञ्ज बीकानेर

मुद्रक □ जनसेवी प्रिन्टर्स बीकानेर

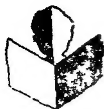
संस्करण □ प्रथम जनवरी ७२

मूल्य □ दस रुपये मात्र

सर्वाधिकार □ लेखकाधीन

DO PATAN KE BEECH

(Poems by Bhawani Shanker Vyas Vinod and Gauri Shanker Acharya Arun)



चमचा पुराण

ᐅᐅᐅ

अच्छा होगा कि शुरुआत मे मिटे भ्रांति का अंधेरा।
मैं बतलादू कि कविता में चमचो से क्या आशय मेरा ?
जिनमे माथा का है अभाव, चिकनापन जिनको बातो मे।
है हुकुम हजूरो किस्मत में पगचम्पी रहती हाथो म ॥
जो आने वाले अफसर को प्रभु का अवतार समझते हैं।
पर जाने वाले अफसर को रद्दी अखबार समझते हैं।
ऐसे नरपुगव नाम-धन्य जब भी इस युग मे आते है।
हे अर्जुन! अपने कर्मो से वे ही चमचे कहलाते हैं॥
अफसर के इर्दगिर्द रहते मत्री के पीछे मडराते।
और विधायको की जेबो में मनचाहे चमचे मिल जाते ॥

२

चमचो म चेप बहुत रहता चिपकें तो पक्के चिपकेंगे।
जिस पिण्डो को पकडेंगे, उसको रावलपिण्डो समझेंगे॥
ये हा में हा कहने वाले, बातो को पालिश करते हैं।
ये मालिश मास्टर जब चाहे हर जैसी मालिश करते हैं॥
कुछ कहते जीवन की बाजी ये चमचे नहीं हार सकते।
क्योंकि ये मक्खन-बाजो मे हो बाजी सदा मार सकते॥
हमने भी सोचा अच्छा हो अफसर के चमचे बन जाए।
पर जहाँ गये पहले स ही तैनात कई कुडछे पाए॥
जो मोटी कढाइयों के भी अतर को हिला रहे ऐसे।
तो चम्मच-ब्राड हजूरी को हो सके वहाँ गिनती कैसे ?

चमचों को पोषण मार बिन्दु [illegible] बाद महोद रहे।
घरवार मे [illegible] घरवार की बीबी के मे [illegible] रहे ॥
यह बात मार्के की मानो चमच [illegible] करो है ?
कारण [illegible] बडे [illegible] बीबी म हारे है ॥
चमचे ये पार [illegible] जो [illegible] सिद्ध हो [illegible] ।
बाबा के मामिन करो [illegible] साहब के मामिन हो जावे ॥
चमचों का [illegible] गोरखधन्धो [illegible] हो महिमा [illegible] ।
बाबो तो याद रहत है माटे चमचा के हा [illegible] ॥
जो आदर [illegible] बनाना हो माटे चमच का गुण करो।
यानी चमचों के चमचे के चमच के [illegible] गुण करो ॥
चमचापन [illegible] शुरु हो जा [illegible] गुण म [illegible] है।
तुम जितने चमचे हो भाई ये भी औरा के चमच है ॥

४

जो चमचा बनना चाहो तो य नुस्खा प्रामाणिक मानो।
लो एक भाग इच्छा शक्ति केन्द्रीय चार भाग लालो ॥
उससे दुगुनी हांजी हांजी, चौगुनी तारीफ़ मिलाओ।
सब घोट गरल कर कपड छन करके जो पुड़िया बनवाओ ॥
तिकड़मबाजी का शहद मिला यह दवा अगर न पाओगे।
तो कुछ ही दिन म आप एक माटे चमचे बन जाओगे ॥
अक्सर चमचों को चाहते हैं चमचे हो उन्ह पूजाते है।
ये दोनो बने सिद्ध साधक, खाते है और खिलाते ह ॥
रिश्वत देना हो तुम्ह अगर डाइरेक्ट नही दी जायेगी।
देहली जाने वाली गाडी रेवाडी होकर आयेगी ॥
कलियुग की चलित कुण्डली म इन चमचा के दिन अच्छे हैं।
ये चमचा-युग है इसमे तो केवल चमचे ही सच्चे ह ॥ ❀

रिश्वत



७७७

ईश्वर ने दा दो हाथ दिये लने देने के ही खातिर।
इतना मोटा मु ह् बरसा है, खाने पोने के ही खातिर ॥
पर कम ठोक तो कम ठोक देखो तुलसी की कविता ही।
'है मव पदारथ जग माही पर कमहीन पावत नाही" ॥

१

ये कमहीन इम दुनिया म जावन पाए तो क्या पाए ?
चौरासी लाख यानिया में जाकर आए तो क्या आए ?
नारद कहते नरदेही में जो रिश्वत से घबराएगा।
वह बार बार चौरासी के चक्कर म चढता जाएगा ॥
रिश्वत ता एक दवाई है जिसके कठो में आती है।
मदाग्नि का रोगी भो हो, पाचन-शक्ति बढ जाती है ॥
रिश्वत है मवव्याप्त जग म यह ऐसी गुप्त कमाई दे।
तुम भने एक्स र ल आओ छाया भी नहो दिखाई दे ॥
ऊपर स सत जन रहते चोटी हत्या में भी खिलाफ।
आजाय पकड म तो निगल, हाथी का हाथी कर साफ।
ये दुनिया ऐम लोगा को ये हो किस्मत का चक्कर है।
टुक्कडखोरा को टुक्कड है, शक्करखोरो का शक्कर है ॥

२

जब तक रिश्वत का माग बम्ब जो हल्ला गून मचाते है ।
जो हरिश्चन्द्र या धमराज को टू-चाँपी दिखलाते हैं ॥
उनको भो रिश्वत दिख जाए तो मन्त्रमुग्ध हो जाएगे ।
भई विश्वामित्र मेनका के चक्कर में चढ ही जाएगे ॥
बस ज्योही मुठ्ठी गम हुई, मैटर के मैटर बदल जाय ।
अ दर को सावुन जो भी हो, ऊपर के रपर बदल जाय ॥
घर बठ बडे अफसरो का जो तुलसी दल पहुचाते ह ।
तो सालिग्राम मस्त रहते मिलजुल कर मौज उडाते ह ॥
रिश्वत के ढ ग अनेको है, झुकना या तनना पडता है ।
रिश्वत पाने के लिए किसी का चमचा बनना पडता है ॥
हो रहा नियम से काम मगर उसको अटकाना पडता है ।
सब बातो की है एक बात कुछ तो गटकाना पडता है ॥

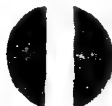
३

बसे भी तो ये कलियुग है इसकी भी ह मर्यादायें ।
खाने पीने तक की इसम अब बदल गई परिभाषाए ॥
अब खाम का मतलब रिश्वत पीने का मतलब है शराब ।
ईमानदार को पीछे से अब लोग, गधा कहते जनाब ॥
अब आप गधा बनना चाहो, तो कोई क्या कर सकता है ?
मरने वाला मर सकता है चरने वाला चर सकता है ॥
मौका चरने का आया है खा पीकर बकरे बन जाओ ।
अब सब भूमि गोपाल जहाँ पाओ उसको चरते जाओ ॥
जो नही पकड म आए तो यह मजा लूटते जाओगे ।
पकडे भो गये तो सरकारी रोटिया मुफ्त मे खाओगे ॥
ऐस लोगा क वचन का नारदजी बतलाते उपाय ।
जो रिश्वत म पकडे जाए वे रिश्वत देकर छूट जाय ॥

* बारह

मेरे पडौस मे कभी एक घोमू छोटे व्यापारी थे।
रिश्वत में चलते पुर्जे थे, बसे तो निपट अनाडी थे ॥
ठेके पाए, लाइसेन्स मिले, जिनको थे रोटी के लाले।
अब ह वे ठेकेदार सेठ घीसा भाई जयपुर वाले ॥
वाह रे रिश्वत का चमत्कार,जो भी इसको अपनाता है।
जब ऊपर से आना होता तो छप्पर खुद फट जाता है ॥
रिश्वत का शब्द कोश न्यारा जो हो पान की आशा म।
चिठ्ठी म बात नही होती हो बात तार की भाषा म ॥
अनुबध इशारो मे होते, आखो-आखो में खाय चले ।
नेना की डैमो मे गटगट-गटगट करते गटकाय चले ॥

यो तरह-तरह की रिश्वत कुछ ऐसे पहुँचाई जाती है ।
चु गी चौकी के नुक्कड पर जैसे चु गी आ जाती है ॥
प्रोपर चैनल की रिश्वत म बाबू चपरासी सब आते ।
जिनको बीबिया चमत्कारी बीजो के माध्यम से खाते ॥
मत्री हो या आफिसर हा वे चमचे सदा पालते है ।
चमचे हो चौथ उगाते है, साडा को घास डालते ह ॥
सबसे मोटी है बात यही कविया ने उत्तम ठहराई।
है सर्व पदारथ जग माही पर कर्महीन पावत नाही ॥





दल-बदलू

कल मिले एक दलबदलू जो हम बोले तुम सिद्धान्तहीन ।
दल परिवर्तन करते रहते नीति विहीन, आदर्शहीन ।।
परसों तक तुम जनसंघी थे कल थे स्वतंत्र अब कांग्रेसी ।
कल सोशलिस्ट हो सकते हो यह बोलो राजनीति कैसी ?
वे बोले मिथ्यारोपण है हम दल-परिवर्तन नहीं करें ।
हम तो सदैव सत्ता दल के सत्ता के साथ साथ विचरें ।।

दुनिया में एकमात्र कोई अच्छा है तो सत्ता दल है।
बाकी तो सारा कूड़ा है, कचरा है कोरा दलदल है।
हो सोशलिस्ट या रैडीकल सत्ता का साथ निभाते हैं।
जनसंघी हो या भगी हो, हम दोनों में मिल जाते हैं॥

θ २ θ

जब दल विशेष की सरकारें गिरने की हालत होती है।
तो प्रजातन्त्र मे एक एक मत की भी कीमत होती है॥
सन्तुलन हमारे हाथो म चरणो म गिरते हैं प्राणी।
खुद मुख्यमन्त्री दौड़ दौड़ करते है अपनी अगवानी॥
मोटे मोटे नेताजी भी हमको इस तरह फुलाते है।
ज्यों रूठे हुवे जवाई को बेटी के बाप मनाते है॥
हम भी अपनी शर्तें रखते और साँठ गाँठ जो हो जाती।
तो राजस्थान लॉटरी, रातो रात हमारे खुल जाती॥
हम नहीं जवाई मामूली, तुटपुट मे नहीं घेरते हैं।
हम तो सरकारी जामाता लाखो पर हाथ फेरते हैं॥

θ ३ θ

मानो जनसंघ का शासन हो और वह भी अंतिम स्वास गिने।
हम कांग्रेस म मिल जाए हूवे पर तीन बास अपने॥
फिर तोड़ा तोड़ चले जब भी, सौदेबाजी का हो मौसम।
ज्यादा रुपयो के साथ, झूलता है अपना भी पैण्डूलम॥
ये बिजनिस बड़ा बुलंद रहे, बगले और मोटर कार मिले।
अपनी दूकान समेटें तो पगड़ी में कई हजार मिले॥
शादी तलाक दोनो बातें अपनी गीता मे हैं समान।
इसको छोड़ें उससे मिललें, यह ही सर्वोत्तम है विधान॥

हम करें सगाई माया से, पर साथ घूमती है प्रसून।
मिस रेखा से शादी होती, मिस रजनी से ही हनीमून ॥
अपनी तो राजनीति ऐसी, औरों को यही सिखाते हैं।
कइयों से हाथ मिलाते हैं कइयों को हाथ दिखाते हैं ॥

० ४ ०

जब जब भी खतरे में कोई सरकार कहीं पर होती है।
तो विधायकों पर कड़ी नजर उस समय सभी की होती है ॥
नत्थू लुहार दो कौड़ी के, मत की कीमत अस्सी हजार।
उनको लेने के लिये जा रही, मन्त्रीजी की फोर्ड कार ॥
श्री रामनाथ खुद पतले हैं, दलबदलूपन में भूल कहाँ ?
कि आज बक वले से आपका किंगकोंग-सा फूल रहा ॥
नैतिकता को ही रखना था तो राजनीति में क्या आते ?
अच्छा हो मंदिर में जाकर के कहीं पुजारी बन जाते।
इस युग में तो सिद्धान्तों की जो पूंछ पकड़ दौड़े जाए।
दुनिया उनको उल्लू समझे वे बड़े गधे माने जाए ॥

० ५ ०

दल की दलदल में क्या रखा कि घर से जोगी बन जाओ।
अनुशासन में रहते रहते टी० बी० के रोगी बन जाओ ॥
कह सकें नहीं सुन सकें नहीं बस घुटने जाते अन्दर हैं।
ये नेता हैं या पता नहीं कि गांधीजी के बन्दर हैं ॥
दल बदलू सदा तेज रहते दल वाले फीके फीके हैं।
दल वाले खूंटे की गाएं दल बदलू सांड सरीखे हैं ॥
दल वाले सभी पुराने हैं दल बदलू हैं लेटेस्ट चीज।
दल बदलू अब मुस्टंडे हैं दल वाले हैं कोरे मरीज ॥
यों कह कर चैन ठाठ में जब दलबदलूजी मोटर सवार।
मुंह में यों अनायास निकला युगदेव तुम्हें है नमस्कार ॥ ▭

[1] मोनट

बीमा की बीमारी



ए० सी० करेण्ट जो पकड करे तो फौरन झटके से छोडे ।
डी० सी० करेण्ट उसको कहते, जो लेकर प्राण साथ छोडे ।।
ये बीमा के एजेन्ट सभी डी० सी० करेण्ट माने जावें ।
जिस पिण्डी को ये पकड करे, मानो सण्डासी बन जावें ।।

θ १ θ

हम अगर कही मिलने जावें पूछेंगे कुशल क्षेम मगल ।
छोटो को चिरजीव कहकर, बोलेंगे जीवन बने सफल ।।
पर बीमा वाले जब मिलते बाबूजी को समझायेंगे ।
क्षणभगुर जीवन है भाई, पीछे बच्चे दुख पाएगे ।।
कल को तुमको कुछ हो जाये, किसके हाथो मे मरण अरे ।
यानी ग्राहक के मरने से बीमा का मगलाचरण करे ।।

एजेंटो का वश चले अगर कुछ चमत्कार ऐसा लावें।
कि कम से कम दो चार लोग बीमा करवा कर मर जावें॥

जिसमे विश्वास वठ जाए तो ग्राहक सख्या बढ जाती।
जितने ज्यादा उल्लू होगे, उतनी ज्यादा लक्ष्मी आती॥
कितना ऊचा आदर्श, नही फिर भी कोई गिनता इनको।
मुझसे ज्यादा मेरे बच्चो की रहती है चिन्ता इनको।

θ ५ θ

जो आज आप इन्कार करें कल, परसो, तरसो आयगे।
बेशर्म विभूषण है पक्के महीनो और वर्षों आएगे॥
ये ऐसे पीछे पड जाए, ज्या जि द किसी न पाले हो।
या तकादगी के हो मुनीम अथवा आर०एस०एस० वाले हो॥

जो भी चक्कर मे आजाए, उसको पूरा झकझोरगे।
कितना ही मक्खीचूस कि तु पालिसी दकर छोडगे॥
हैजा मलेरिया, बवासीर चेचक भी मिटे महामारी।
जीवन भर साथ निभाती है केवल बीमा की बीमारी॥

इतनी निश्चित है कटौतिया प्रति माह रकम कट जाती है।
स्त्रिया मास में एक बार ज्यो मासिक धर्म निभाती है॥
छ छ महीना के बडे प्रीमियम देने की नौवत आती।
तो अर्थव्यवस्था विगड जाय और घर की बीमा बिक जाती।

बीबी को साडी नही मिल, बच्चो की फीस लटक जाती॥
घर उधारखाते म चलता बाबू की हवा बिगड जाती॥

θ ३ θ

जो कभी लोन लेना हमको, तो इनके ठाठ दूसरे हैं।
लेने के वाट दूसरे हैं देने के वाट दूसरे हैं॥
यो कर्ज आपको लेना है वैसे भी रकम आपकी है।
इस तरह घुमाएंगे लेकिन ज्यों पूंजी इनके बाप की है।
बेटी की शादी होनी हो, ऋण लेने की अर्जी जाए।
तो जब तक लोन मिले तुमको, बेटी के बेटा हो जाए॥
हो जाय रिटायर कई लोग यह रकम नहीं फौरन आती।
इसको लेने के लिए टायरों की जूती घिसती जाती॥

ऐसा भी होते देखा है कि रकम हाथ आते आते।
कुछ खुशनसीब हैं जीवन से ही पूर्ण रिटायर हो जाते॥
ये बीमारी हो सवव्याप्त बीमा होती है नाडी की।
बंगलों, फैक्टरियों, बैंकों की स्कूटर, मोटर गाडी की॥
यानी सारी नश्वर चीजें, बीमा के घेरे में आती।
अच्छे गायक हो आप गले तक की भी बीमा हो जाती॥

θ ४ θ

कल ही था मेरा जन्म दिवस, घर पर बीमा वाले आए।
आते ही राग छेड डालो, जल्दी से बीमा करवायें॥
जीवन का क्या भरोसा है मानो कल को ही मर जाओ।
बच्चों का ख्याल करो इनके खातिर ही बीमा कर जाओ॥
मेरी माताजी गरज पडी बीमा वाले पर दांत भींच।
इस वर्षगांठ पर मरने की बातें करता है महानीच!

मरने म मजा अगर आए तू मरे तुम्हारा बाप मरे ।
है खबरदार जो आग से इस घर की ओर कभी गुजरे ॥
तो सिर की खैर नही होगी इस माथे का करना खयाल ।
चल भाग यहां स बडा यहां आया बनकर बीमा दलाल ॥

माताजी सोटी ले आई और उनके देव प्रयाण हुए ।
जूता को ल हाथा में बीमा वाले अन्तर्धान हुए ।

अब कभी रास्त म मिलते मैं कहता हूं घर आएंगे ।
वे कहते आने से पहले, सिर का बीमा करवाएंगे ॥
मन म सोचूं मेरी अम्मा जसी होवे मात सारी ।
तब ही मिट सकती भारत स ऐसी बीमा की बीमारी ॥





(अ) धर्मक्षेत्रे कुर्सी क्षेत्रे

आ गया जमाना कुर्सी का, उसके हृष्य का पागो का।
आमद का और खुशामद का, छोना झपटी के स्वांगा का ॥
सजय कहते धृतराष्ट्र सुना ! मैं खोलू दिव्य नेत्र अपना ।
अब कुरुक्षेत्र है कहा आज यह भारत कुर्सीक्षेत्र बना ॥

श्री धतराष्ट्रोवाच

हे सजय ! "कुर्सीक्षेत्रे मैं समवेता सकला युयुत्सव
पाण्डवा कौरवाश्चैव किम् कुर्वन्ति बान्धवा"
सजय बोले राजन् ! कुर्सी के चक्कर म वे आए हैं।
पाण्डव-पाण्डव स भिडें आज कौरव-कौरव टकराए हैं ॥
मानव की पूछ नहो है अत्र कुर्सी निर्णायक फैक्टर है।
बिन कुर्सी वाले बडे बडे भा सडक छाप इन्सपैक्टर हैं।

वे खाली कोठी में न्याय कोई स्वीकार नहीं करते।
चपरासी तक भी प्यार नमस्ते का व्यवहार नहीं करते।
कुर्सी हाथों से जाते ही इज्जत भी छोड़ चली जाती।
पैंटें ढीली पड़ जाती हैं, मूँछों की मोड़ चली जाती॥
कुर्सी और कलम हाथ में हो तो लोग मारना भूल जायें।
सब हरदम सुखराम हो जाय, सुपारी मोटे दब जावें।

0 • 0

कुर्सी की महिमा है अपार जो भी इसको पा जाते हैं।
असवारी दुनिया के खातिर वे ही हीरो बन जाते हैं॥
जो किसी जमाने के दिग्गज थे, वे पीछे रह जाते हैं।
बस ईश्वर से दो चार हुए ही वे मौन रह जाते हैं॥
जो भी कुर्सी पर आ जायें, तो पीर जमाना होता है।
तरक्की से गांठ लगा करके गुट का निपटाना होता है।
कुर्सी की प्रथम शर्त है यह प्रतियोगी का मन साफ करो।
अलाउद्दीन बनाना चाहो जलालुद्दीन का साफ करो॥

कुर्सी में पहले दुबले थे अब दुबलेपन का कहां काज?
जो पहले लाल बहादुर थे वे हैं जगजीवनराम आज॥
ये कुर्सी है या च्यवनप्राश ताकत भी हम असीम लगे
जो थे फिरकाटी पहलवान अब देखो भारत भीम लगे॥

गालों में खड्डे पड़ते थे घस जावे करम की गोटी।
कुर्सी पाते ही गाल लगे ज्यों फूली हुई डबलरोटी॥
टांग हरिकीर्तन करती थी, ताकत में पूर्ण विराम लगे।
जो कभी सुदामा ब्राह्मण थे वे आज चंदगीराम लगे॥

θ ३ θ

कुर्सी में रूप छिपा रहता पावर म ही सुन्दरता है।
तुम हो कुरूप पर परम रूप वाला भी तुम पर मरता है॥
कालो मिर्चों के पापड़ सा चेहरा चेचक से भर जावे।
कुर्सी हो तो सुन्दरिया भी तुम पर न्योछावर हो जावें॥
कुर्सी वाले की कीमत है, दुनिया उसको जय बोलेगी।
जिस जगह व हैया जायेगा राधाए पीछे डोलेगी॥

कुर्सी छिन जाए अगर गधी भी तुम पर सुनो नही मरती।
बासी रोटी बन जाओगे, कुतिया भी कद्र नही करती॥
काला पत्थर भी अगर कही कुर्सी के ऊपर आ जावे।
तो सालग्राम मान कर के दुनिया मे वह पूजा जावे॥

θ ४ θ

लोगो का ऐसा है उसूल पहले खर्चो फिर उगराओ।
रिश्वत देकर कुर्सी पाओ, कुर्सी पाकर रिश्वत खाओ॥
लाखो रुपयो का बजट रहे, हल्के से हल्का खाओगे।
दो चार वर्ष मे बिड़ला के बेटे पोते बन जाओगे॥
लेकिन दो नम्बर के खातो मे ही सब हिसाब रखना होगा।
अन्दर म खाओ ऊपर से ईमानदार बनना होगा॥
कुर्सी वाले जनसेवी हैं, लोगो के काम बनाते हैं।
वे तो निर्लिप्त सदा रहते, रिश्वत तो चमचे खाते हैं॥

श्री सजयोवाच

हे राजन ! यत्रयत्र कुर्सी है यत्र स्वार्थो भयकर
वस तत्रतत्र विजयमस्ति एव नास्ति सशय ॥"
इति कुर्सी पुराण भारतखण्डे नर नारायण यशोगान।
अतिमोध्याय समाप्त हुवा, केवल कुर्सी ही है महान ॥▷



कडके

कडके वे है जो औरो की जेबो का सदा ध्यान रखते ।
सभावित खर्चे से लेकिन अपने को सावधान रखते ।।
जो मीठी-मीठी बातो मे ही स्वार्थ सलामत कर लेते ।
उल्टा ही चले उस्तरा पर जो ठीक हजामत कर देते ।।

मित्रो के घर का पैसा हो तो सब भूमि गोपाल रहे ।
जो अपने घर का पैसा हो आगे से जै गोपाल रहे ।।
इनके चक्कर में जो आए हम उनकी व्यथा सुनाते है ।
इन मुफ्तखोर मित्रा यानी कडका की कथा सुनाते है ।।

० २ ०

एक रोज बहुत जल्दी तडके आगये हमारे घर कडके ।
आवाज जोर से दी, निद्रा से जागे हम घबरा करके ॥
मनहूस दिवस है कह देवीजी घुसी रसोई में जाकर ।
दरवाजा खोला शनिश्चरों के ध य हुए दर्शन पाकर ॥
हम बोले है यह ग्रहो भाग्य लो चाय नाश्ता आप करो ।
मन मे सोचा कम्बख्तो तुम चुल्लू पानी म डूब मरो ॥
वे बोले चाय बहुत अच्छी नमकीन विशेष लुत्फ का है ।
हमने सोचा क्यो नही रहे आखिर तो माल मुफ्त का है ॥

० ३ ०

हम गये चाय की होटल में, काफी आई अखबार पढे ।
इतने में जाने मे कब कसे कुछ कडके अपनी ओर बढे ॥
ओहो गुडमॉर्निंग सर', कह कर जो किया जोर से अभिवादन ।
सोचा कि एक रुपये के तो अतकाल का आया क्षण ॥
मन म तो चला मरशिया पर ऊपर से कहा चाय लाओ ।
मित्रो के अपण समझ उमे सोचा कोओ पीते जाओ ॥
उनको अलविदा नमस्ते म माना कि छूटे सस्ते में ।
हे ज म ज म के जवाइयो अब कभी न मिलना रस्ते मे ॥'

० ४

१ इच्छा थी कोका-कोला की पीने को हम दूकान चले ।
पर ज्योही बोतल खुलवाई तो लगा कि ज्यो भूकम्प चले ॥
आगए आठ कडके फौरन, बोतल शहीद हुई उन पर ।
यो सवा पाच का बिल आया कोका-कोला की गल्ती पर ॥

तुम कभी पान खाना चाहो और ये टिड्डीदल आजावे ।
तो एक रुपये में जाकर के एक पान खाया जाव ॥
जब भी ये कड़के आते हैं तो मन में होती है इच्छा ।
पूरी हो चुकी नमाज मुसल्ला आप उठावें तो अच्छा ॥

θ ५ θ

घर में कोई बीमार पड़े कड़के यारी पे जायेंगे ।
उनके घर में बिजली का पखा माग दान से लायेंगे ॥
कड़कों के मस्ती हो जाये, भीगते यार पसीने मे ।
मुश्किल से बिल्टो छूटेगी जाकर के एक महीने मे ॥
इनका है दाव बहुत सच्चा अपने शिकार म रहे जुटे ।
कुत्ता से पिण्डली छूट जाय कड़का से पिण्डली नही छूटे ॥
कइयो के चरणकमल शुभ है कइयों के शुभ होते दर्शन ।
कड़कों की पीठ सदा शुभ है जो पीठ दिखावें तो उत्तम ॥

θ ६ θ

हो श्राद्धपक्ष अथवा बरसी या जन्म दिवस कोई होता ।
कड़कों का सूत्र बाप के घर से मिला हुआ पक्का योता ॥
इनकी डायरियो म अंकित सारे उत्सव त्योहार रहे ।
जो मित्र बुलाना भूल जाय तो भी कड़के तयार रहें ॥
फक्शन हो कोई बड़ा तो आप विराट रूप दिखलाते है ।
फिर बाल गोपाल लिये दोनो कड़के और कड़की आते हैं ॥
इनमे सच्ची हमदर्दी है जब नाता आप जोडते है ।
तो इनको पक्को नगन जन्म-जन्मान्तर नही छोडते है ॥

♪ दुःशाला

θ ७ θ

जो कभी यात्रा पर जाए, सब पते ठिकाने याद रहे ।
जिस गाव शहर म पहुँचेंगे, मित्रो के घर आबाद रहे ।।
जब कभी अचानक पड जायें, ऐसे टिड्डो दल का डेरा ।
भौंचक्के दोस्त सोचते है, हो गया शनिश्चर का फेरा ।।
दस पद्रह दिन मे भलो भाति जब पूरा धुलाई हो जावे ।
तो इधर काफिले कूच करे और उधर सफाई हो जावे ।।
पर जाते जाते भी कडके मित्रो का धर्म निभाते है ।
क्या करें किराया नही बचा", कहकर उधार ले जाते हैं ।।

θ ८ θ

इसलिये आरती करता हू, 'हे मेरे कडकेश्वर महान ।
मुझको तो माफी बख्शो अब औरो पर होवो तुष्टमान ।।
पहले तो मैं एक ब्राह्मण हू फिर और बाल-बच्चो वाला ।
उस पर महगाई भारी है, कुछ तो सोचो हे गोपाला ।।
दुनिया है बहुत बडी स्वामी, अच्छा हो जगह जगह विचरो ।
है जिसे शनि की महादशा उस घर मे पहुचो शनीश्चरो ।।
अब तो किष्कधा काण्ड करो, बसे हो जीवन खर्चीला ।
तुम को है भक्त बहुत सारे दिखलाओ नई रामलीला ।।
तुम नहीं दृष्टिगत हो, ऐसी अभिलाषा रोजाना करते ।"
कडके वे हैं जो— —।।



सारी दुनिया एक तरफ



कानून बनाये पडे रहे, फरमान निकाले रह जायें।
जिसके जूतो मे जोर रहे बस उसके पत्थर तर जायें ।।
जब जूते पडे तो बडो-बडो के हो जाते हैं होश तलब।
है सारी दुनिया एक तरफ जोरो के जूते एक तरफ ।।

θ १ θ

उद्योग अनेको पिछड रहे पर मै गारटी पक्की है।
अपना जूता उद्योग तेज जूतो मे बडी तरक्की है ।।
जूतो का रोब सभी माने ये सबमे तेज निकलते है।
ससद म और विधान सभाओं में भी जूते चलते है ।।
शिक्षा म भी इनका महत्व विद्यार्थी आत्मसात करते।
दीक्षा त समारोहो से हो जूता की शुरुआत करते ।।
पहले मू छो की साख रही, अब तो उनकी भरपाई है।
भारत न आज विदेशा में जूता की साख जमाई है ।।

निर्यात हमारा जोरदार, इसमें 'तो देश विजेता है।
'अमरीका' देता है अनाज पर भारत जूते देता है।
दुनिया के बडे बडे पावर, अपने जूतो से हिलते हैं।
श्रद्धालु रूसी जनता को भारत मे जूते मिलते हैं॥
जूता का धधा जोरदार है नही तनिक भी इसमे ब्लफ।
हो सारी दुनिया एक तरफ जोरो क जूते एक तरफ॥

θ २ θ

जूते सब स्थानो पर जात, हम इनको नहीं बदलते हैं।
पाखाने से लेकर खाने तक वे हो जूते चलते हैं।
कहते हैं कोई भिश्ती था, चमडे के सिक्के चला दिये।
पर उसने भावी दुनिया को तो पाठ अनेका सिखा दिये॥
कितनी ही कठिन समस्या हो, हल उसका शीघ्र निकल आवे।
यदि ठीक ठिकाने सही जगह चमडा के सिक्के चल जावें॥

पुलिग बिचारे पड रहे स्त्रीलिग की शक्ति अपार।
जूते ढीले पड सकते हैं पर जूती होती जोरदार॥
जो पत्थर दिल अफसर होते अ य त बेरुखे दिखलावे।
चांदी का जूता पडत हो वे मोम समान पिघल जावें॥
जूतो की बात सदा फेयर, बाकी बकवास समझलो रफ।
हो सारी दुनिया एक तरफ जोरो के जूते एक तरफ॥

θ ३ θ

बह देखो मम सेना जाती कैसे कसे बल खाती है।
आधा जाये आधो बाहर आधो छाती दिखलाती है॥

॥ ६ ॥

ये मिनिस्टर अफसरान इसलिए कभी कभी मन्दिर जाते ।
इनको भक्ति से क्या लेना ये तो उद्देश्य लिये आते ॥
जब वदिया से जूते उतार जो भी जावे दर्शन करने ।
तो बाबू चम्पतराम जूतियां नजर अन्तर्ध्यान करें ॥
फिर कुप, रबड़, चमड़े, गत्ते की चिन्ता कभी नहीं करते ।
ये चारों में पारंगत हैं प्रभु अवगुन चित नहीं धरते ॥
जब आम चुनाव कभी आते तो नेता चाहे खोद करे ।
पर फटे पुराने जूतों को कुछ लोग तुरन्त खरीद करे ॥

इनके भी ठेके होते हैं जो भाव ताव तय हो जाव।
ये विरोधियों की मीटिंग म ठेके पर जूते फिकवावें ॥
नेताजी भाषण शुरू करें, ये फेंकेंगे उन पर चप्पल।
बेबी-शू फटो हुई जूतो, टूटे तलवे ग दे सेण्डिल ॥
जो इनको भारी रकम मिले तो ये इतना तक करवादें।
कि सभा बीच नेताजी को जूतों की माला पहिना दें ॥
कोई सा दल, पसो के बल इनसे करवा सकता करतब।
हो सारी दुनिया एक तरफ जोरा के जूते एक तरफ ॥

इति श्री चमचापुराणे जूता खण्डे चर्म चमत्कार कथामा
मुक्तभोगो अध्याय समाप्त।





मून पर हनीमून

आर्मस्ट्रोंग, कौलि स, एल्ड्रिन गये चन्द्र पर
हमने सोचा निश्चय रूपराशि लायेंगे ।
शुभ्र चन्द्रिका रजत धवल राका की शोभा
लाकर धरती पर मनचाही छिटकाएंगे ।
कामिनियों की केशराशि क लिये वहां म
जूडो मे जडने को रजत पुष्प लायेंगे ।
और नहीं तो वहा सोमरस मिलता ही है
अमर बतान हम कुम्भ भर ले आएंग ।
कि तु 'मस्ट्रो बॉक्स गुने तब हमने देखा
ये तीनों ही कोरे गोते खात आए ।
धरती पर क्या कमी पड गई इन चीजो की
जो कि चन्द्रमा पर जाकर वे भाठे लाये ।

० २ ०

इन भाठों के लिये, भाट बन गये जगत के
सब अखबार, रेडियो ने इनको खूब लड़ाया।
कई बधाई-पत्र और संदेश अनेकों
भेज-भेज कर इनको देव-तुल्य ठहराया।
हमने सोचा लोग अमेरिका के खुश हैं
इस अवसर पर बढ़िया-बढ़िया तोहफे देंगे।
किन्तु राष्ट्रपति निक्सन ने यह फरमाया है
सारे राष्ट्राध्यक्षों को भाठ भेजेंगे।

० ३ ०

चन्द्र धरातल की भी अब कुछ करो कल्पना
वहां अनेकों चट्टानें क्रेटर मिलते हैं।
ऊबड़ खाबड़ भूमि बड़ी बड़ी पहाड़ियाँ
नहीं चन्द्रिका और नहीं तारे खिलते हैं।
अ गा मे कोमलकायी कमनीय नारियां
चन्द्रमुखी कहलाने में नफरत लायेंगी।
एचोतानी खेचर चाटी, उबड़ा-कुबड़ी
मन्दी-सी नारियां चन्द्रमुखी कहलायेंगी।

० ४ ०

चन्द्र धरातल से यह अपनी प्यारी धरती
बीस गुना चंदा से भी लगती चमकीली।
कहीं बादलों की झीनी चादर में लिपटी
लग कि जैसे मोई हो षोडशी नवेली।

सच कहता हूँ इस सुन्दरता पर मोहित हो
देव अप्सरायें भी नाम बदलवाएगी ।
धरणी-बाला भू कान्ता, भू सुतो, धरित्री,
भूमि किरण या धरा मोहिनी बन जायेगी ।

० ५ ०

हवा नहीं है वहां नहीं उड़ती हवाइयाँ
ऐसी गर्मी नहीं कि ठोस पिघल सकता है ।
इसीलिये अमरीका वालों ने यह माना
शीत युद्ध का केन्द्र चाँद पर चल सकता है ।।
परम सुरक्षित वहाँ सामरिक अड्डा होगा
गुप्त रूप से कई गुप्तचर भिजवाएंगे ।
चन्द्र कक्ष के किसी बॉक्स ऑफिस में बैठे
दुनिया भर की फिल्में आप देख पायेंगे ।

० ६ ०

चन्द्र लोक से लौट आगये जब धरती पर
चन्द्रयात्री शायद नजर नहीं लग जाए ।
अलग थलग से किसी कांच के घर में रखा
बेचारों ने वहीं विरह के दिवस बिताये ।
उधर पत्नियां अपने अपने चाँद सलोनो
के वियोग में रात-रात भर कैसे सोए ?
मून रिटर्न्ड मुसाफिर इधर पड़े बेचारे
आपस में मिल मिल कर अपना रोना रोए।

वाह् रे चांद कि तुमने इन चकवा चकवी का
दूर कर दिया, कालिख यह तब ही धो पाम्रो।
ग्रागे से हर शादी शुदा नये जोड़े को
हनीमून के लिये मून पर शीघ्र बुलाम्रो।





मै गजों का लोहा मानू !

गाधी नेहरू चर्चिल पटेल, ख्रुश्चेव ग्रौर ग्राइजन हावर ।
ये सारे के सारे गजे गजो मे होता है पावर ॥
कि जो धरती को हिला सके मैं तो केवल इतना जानू ।
गजापन यानो भ्रटलस मैं गजो का लोहा मानूं ॥

ग ९ ६

हो जाय मफाया बाना का जव कभो हजामत हो जाव
पर रादगा के सिर व ममान य कट ाल फिर ग्रा जाव ॥
वाला की पदावार तुरन्त जितना चहो काटो इनको ।
दिन भर मवारने तेल लगान स फुमत मिलती किसको ॥
पर धन्य धरातल पर व हैं जिनक सिर गज निखरता है ।
जिनके सिर चाद चमकतो है जिनक सिर टाट टपकता है ॥
ये लाग भूल स यदि कभी क्या खराद कर ल ग्रावें ।
वह जोवन भर चल जाएगा, पर नही तिडकन हो पाव ॥

बोतल भर तेल चले इनके दो वर्षों तक आसानी से ।
साबुन महिनों तक चल जाए सिर धुले जरा से पानी से ॥
काले बालो का ब्लक बोर्ड इनके सिर कभी न टिक पाए ।
नाई सपने म भी आ कर इनका मुडन ना कर पाए ॥
जूओं का टटा नही इन्हे, फोडो का फदा नही इन्हें ।
कंघी, मशीन, उस्तरे आदि चीजो का धधा नही इन्हे ॥
फिर क्यों कर बोला नही गज को कीमत को मैं पहिचानू ।
गजापन यानी ग्रेटनस— —॥

θ २ θ

इतनी कोमल है त्वचा, और चिकनाई जब उस पर छावे ।
मक्खी जो टाट मध्य बठे तो फिसल नाक पर आ जावे ॥
इनकी कोमलता के आगे नारी के अग लजाते हैं ।
सुदरता में इनके आगे, फूलो के रग लजाते हैं ।
तुम हाथ फर दो सिर पर तो मानो मखमल पर फेर रहे ।
मालिस जो करना शुरू करो, जानो फूलो स खेल रहे ॥
श्रीमान् गजधर के सिर पर यदि कभी मेह बूदे गिरती ।
वल्ला इक मधुर रागिनी फिर आठो स्वर मे फूटी पडती ॥

हर एक बूद धारा बनती आग पीछे दाए—बाए ।
हर तरफ ढाल बहती बूदें जसे छाते की धाराए ॥
गर्मी में टाट तप ऐसे ज्यो राजस्थानी टीला हो ।
या गम घडा हो पनघट का या तू बा एक लचीला हो ॥
सर्दी के दिन है खतरनाक गजो की नानी मर जाती ।
इन सारी चिकनी टाटो पर धारा चवालिस लग जाती ॥

रौबीला चश्मा



जो रौब नही बाकी चितवन मे या कि गुदगुदे गालो में ।
जो रौब नही पतले अधरो मे या घुघराले बालो मे ॥
जो नही मिलेगा जुल्फो मे दुनिया के किसी करिश्मे म ।
वह रौब सुरभित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे मे ॥

θ १ θ

अब नही जमाना कसमो का जो कई पुरानी रस्मो का ।
आ गया जमाना सरे आम जो आज हमारे चश्मो का ॥
तुम किसी वेष म हो चाहे अफगानी हो या ईरानी ।
खूनन कॉटन या टरेलिन, अचकन हो या कि शेरवानी ॥
साडी हो या सलवार नही पडता चश्मे मे अन्तर है ।
सर्दी गर्मी वर्षात सभी मौसम मे चश्मा बेहतर है ।
यह फशन है यह शोभा है यह सु दरता है गहना है ॥
पुलिंग स्त्रीलिंग और नपु सक लिंग सभी ने पहना है ॥
यह दुनिया एक नुमाइश है जो इसे देखना चाहो तुम ।
तो बदल बदन कर लाल हरे काल चश्मे अपनाओ तुम ॥
या रग रग के चश्मो में दुनिया रगीन दिखाएगी ।
क्षण भर म सारा सृष्टि टक्नीकलर फिल्म बन जाएगी ॥
चश्मा चुम्बक है कई निगाहो को आकर्षित करता है ।
चश्मा मूविंग कमरा है सब दृश्य संकलित करता है ॥
आखो का रक्षा मन्त्री है रक्षा का भार उठाता है ।
यह धूल धुए म धूप और धक्क से आँख बचाता है ॥
आधी दुनिया तो इसीलिए रहती है चश्मे के वश में ।
जो रौब सुरभित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे में ॥

θ २ θ

जितने भी हैं रणजीतसिंह चश्मे में आंख छिपाते हैं।
जिनके चेहरे पर तिला-लेश वे भी चश्मा अपनाते हैं॥
ब्रह्मा ने जिनको आंखों के एगल ही गलत खींच डाले।
अपनाए चश्मा सभी डेढ या पौने दो आंख वाले॥
गजों की हल्दी-घाटी को चश्मा ही बनता सीमा है।
इन दंतहीन वेदन्तो को चश्मे बिन बिकती बोभा है॥
कमजोर आंख वालों को तो चश्मा ही परम सहारा है।
ये 'चश्म शरणं गच्छामि' का रोज लगाते नारा है॥

क्योंकि चश्मा उनसे कहता कि "क्लव्य मास्मगम पार्थ"।
'त्वम सर्वे धर्माणि परित्यज मामेकं शरनं वृज"॥
ये अफ्रीकन चेहरे वाले काला चश्मा अपनाते हैं।
तो ऐसा लगे कि ऐनक में श्री महिषासुरजी आते हैं॥
क्या रहे औरतें भी पीछे लेडीज फस्ट कहलाती हैं।
गलियारों में जब बनी ठनी कलियुग की परियां आती हैं॥
काले चश्मे में ठुमक-ठुमक जब चलें भारतीय सतियां हैं।
लगता है इंग्लिश महिलाओं की आप कापिन प्रतियां हैं॥

6 ॰ 6

कुछ लोग रात दिन चश्मे को आंखों पर छाया रखते हैं।
कुछ जब पढते हैं सिर्फ तभी बस इसे लगाया करते हैं॥
क्योंकि जो नहीं लगाए तो जाने क्या से क्या हो जाए।
माता सीता को ये सज्जन फिर माला सिन्हा पढ जाए॥
ये पढें भरत को भात और हल्का को पढ जाए हल्वा।
जो लिखा खड़ी पढादें रबडी जो लिखा हवा तो पढें दवा॥
इनकी खुराक है बहुत तेज जब भी कुछ पढ़न लाते हैं।
दो चार शब्द दो चार वाक्य चलते २ खा जाते हैं॥

ये लम्बो सो गदन वाले पिचके-पिचके गालो वाले ।
कुछ बडे फ्रेम के चश्मे म ये घसो घसो आखों वाले ॥
जो निकल जायं बाहर तो चेहरा कार्टून दिखलाता है ।
शकस वोकलो को फोरन अपना मैंटर मिल जाता है ॥
ये शुद्ध सुदामा-ब्राड अगर मोटा सा फ्रेम लगाते हैं ।
तो फिर लका मे रामचन्द्र वाले सैनिक दिखलाते हैं ॥
कइयो के काच बहुत मोटे ऐसा चश्मा जो हम पावें ।
तो इधर लगाया उधर सभी नैगेटिव फिल्म नजर आवें ॥

ये चश्मा तो जादूगर है करता जाता अपने वश में ।
जो रौब सुरक्षित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे मे ॥

θ ४ θ

श्री ऐनकदास बिना चश्मे यदि कभी सडक पर आजाए ।
उस दिन की सारी घटना से इतिहास एक ही बन जाये ॥
वे कभी सडक के पत्थर का दुर-दुर कह कुत्ता समझेंगे ।
तो कभी किसी से टकर उसी को अधा कहकर उलझेंगे ॥
अपलम् चपलम से टकर गाल पर चपलम भी पा सकते है ।
या रहा सामने बल उसी से मिलने भी आ सकते हैं ॥
हो भरत मिलाप वहा ऐसा फुट बॉल आप बन जाएगे ।
जसे तसे घर पहुँच जाय चश्मे को तुरन्त लगाएगे ॥

चश्मा आखो पर आते ही ठुड्डी कुछ ऊची उठ जाती ।
सीना कुछ आप ही तन जाता छलों की चाल बदल जाती ॥
यो अकड दिखाकर चलते हैं जैसे चिडियो में चील चले ।
या नई बहू को सास चले या जीता हुआ वकील चले ॥
या अकड दिखाते ऐसी ज्यों ससुराल जवाई आया हो ।
या पद्म विभूषण, पद्म श्री का खिताब कोई पाया हो ॥
चश्मे में बीजगणित रहती प्लस माइनस के नम्बर सब में ।
जो रौब सुरक्षित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे में ॥

चा य



आगया जमाना बीड़ी का सिगरेट के मधुरिम गानों का ।
जर्दे का भग मखाना का जी सदा सुरंगे पानों का ।।
अब दूध, दही, मक्खन, मिश्री की बातें सदी पुरानी हैं ।
जो चाय डबल रोटी बिस्किट फशन का बात सुनानी है ।।

θ १ θ

'ओ जागो मेरे प्राणनाथ ओ जागो मेरे जीवन धन ।
पन्छी जागे, गायें बोली, ग्वाला आया लेकर बतन ।।'
पर क्या मजाल हम जाग जाय गृहलक्ष्मी जब थक जाती है ।
वह आखिर लाती चाय चाय की प्याली हमें जगाती है ।।
मैं इसे चाय का युग कहता यह अपनी जीवन-घूटी है ।
हर घर में रोज चाय पीना तो फंडामैंटल ड्यूटी है ।
तुम शासक-दल या कांग्रेस के हो सदस्य मेरे प्रियवर ।
मैं सभी पार्टियां छोड सिर्फ हूं चाय पार्टी का मैम्बर ।।

तुम चाहे बनो मिनिस्टर पर मिलती गाली और दुत्कार।
मुझको मिलती है चाय दूध मेवे मिष्टा न मिलें सार ॥
श्री चायामृत का पान सकल सुख कर मानवो क्लेश हर।
अधर मधुर, जिह्वा मधुर, मधुराधिपते अखिल मधुर ॥
जब तक जोओ तब तक पीम फिरो आनी है ना जानी है।
जो चाय डबल रोटी बिस्किट फैशन की बात सुनानी है ॥

θ २ θ

मेरे दादाजी भक्त बड़े जप करते थे गायत्री का।
हम सदा सवेरे भक्ति-पूर्वक ध्यान धरें चायत्री का ॥
वे राम नाम रस पीते थे हम चाय नाम रस पीते हैं।
वे प्रभु-विनती पर जीते थे हम लिप्टन टी पर जीते हैं ॥
टी गल आड मा लाओजी बिस्तर पर बठ पाओजी।
तो त्वमेव माता पिता त्वमेव कहकर चाय चढ़ाओजी ॥
फिर देखो नींद नदारद है स्फूर्तिकर होती थकान।
सिरदर्द उदासी मायूसी, आगे से करती है सलाम ॥

ये है जुकाम में एनासिन जी मचले तो अमृतधारा।
यह च्यवनप्राश, यह ब्रह्म-बटी रस भस्म रसायन है सारा ॥
नारद कहते नारायण से देखो मैं चाय चलानी है।
जो चाय डबलरोटी बिस्किट फैशन की बात सुनानी है ॥

θ ३ θ

जब चाय केतली* नृत्य करे कत्थक नर्तन शर्माता है।
संगीत छेड़ता जब स्टोव पायल का स्वर दब जाता है ॥

* चीमालीम

यो गीत और संगीत भरी ओठो तक आती है हसती ।
होता है पाणिग्रहण बढ़ाती अधरा की मादक मस्ती ॥
मेरी सरकार गम होती पर मीठी लगती है कमाल ।
ज्या कभी क्रोध में नारी के हो जाय गुलाबी रंग गाल ॥
जब चाय चली तो हाय चली लस्सी का लश्कर ढाय चली ।
शबत का सर सरकाय चली देशी शराब को खाय चली ॥
लमन विम्टो करते तोबा ली छाछ राब को भी गम है ।
बन गई चाय डिक्टेटर अब जनरल अयूब मे क्या कम है ॥

θ ४ θ

यदि कभी अचानक मेहमानो की टोली से तुम घिर जाओ ॥
और अपनी जान बचानी हो तो इस नुस्खे को अपनाओ ॥
ला एक पाव भर दूध चाय में डेढ़ सेर पानी डालो ।
हो काली मिर्च जरा ज्यादा, शक्कर का बजट घटा डालो ॥
पहली चुस्की के साथ गले मे जलन धमधसी आएगी ।
अंतिम चुस्की तक पावो में जूती खुद ही चढ़ जाएगी ॥
या माल बचाकर भागेंगे ज्यो पतग चले कट जाने पर ।
जैसे मच्छर भग जाते हैं डी डी टी के छिड़काने पर ॥

मैं सिंगल चाय डबल रोटी डालमिया बिस्किट जो पाऊ ।
तो "आठहूँ सिद्धि नवो निधि को सुख" बडे ठाठ से ठुकराऊ ॥
यह कानो चाय कबीरा को चटता है दूजा रंग नहीं ।
इसकी तुलना म चरस और तम्बाखू, गाजा, भग नहीं ॥
मैं कब तक कहता रहू चाय की लम्बी एक कहानी है ।
जो चाय डबल रोटी बिस्किट फरान की बात सुनानी है ॥

इनकी मर्दानी जर्दे में

ये मद बाकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे मे ।
इनकी मर्दानी जर्दे मे ॥

० १ ०

कब्जी की ग्राम शिकायत हो या बदहजमी के हो शिकार ।
या वात-पित्त के रोगी हो अथवा आतडियो म विकार ॥
दाँतो मे कीडा पडा हुआ या हाथ पर ठडे रहते ।
नाडो जो ढोली चलती हो अथवा गमगीन बने रहते ॥
मत फिरो डाक्टरो के पीछे सन्तो न राह बताई है ।
ऊपर के रोगो क खातिर जर्दा पटेट दवाई है ॥
जर्दा है राम-बाण ग्रोषधि रगरग मे चुस्ती लाता है ।
जर्दा हकीम वोरूमल सा बुढढा में मस्ती लाता है ॥

अजी भूतकाल म कौन भला इन्जेक्शन लेता देता था ।
छोटे मोटे रोगो पर तो रोगी जर्दा खा लेता था ॥
तुम म" नही वन मकत हो केवल तलवार चलाने म ।
मर्दानी का सर्टीफिकेट मिलता है जर्दा खाने मे ॥

हमको जर्दा कड़वा लगता खाने वालों को दावत है ।
राणाजी को जो जहर लगे मीराबाई को अमृत है ॥
जर्दे के गुण अस्पष्ट क्योंकि वे छिपे हुए हैं पर्दे में ।
ये मद वाकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे में ॥

θ २ θ

प्रातः उठकर ये मर्दाने जर्दे को प्रथम चबाते है ।
दिन के भोजन का उद्घाटन जर्दे के साथ मनाते है ॥
बिस्तर पर बैठे बठे ही लगाते जर्दा हथियाने म ।
पाखाने स पहले इनको गौरव है जर्दा खाने म ॥
जर्दे म सभी विटामिन, ये एनर्जी फूड कहाता है ।
शिलाजीत की तरह सुनो मिन्टो म असर दिखाता है ॥
जर्दा जोरू से अच्छा है, हर समय साथ म रहता है ।
पॉकिट मे दिल पर रहता है मुह म अधरो पर रहता है ॥

वह गोरी है यह केशरिया सौरभ वाला भीना-भीना ।
जोरू बिन महिनों काट सकें जर्दे बिन बहुत कठिन जीना ॥
पत्नी से ज्यादा सहनशील जब चाहो रौंदो, पुचकारो ।
इच्छा माफिक मसलो कुचलो, फटकार हथेली पर मारो ॥
पर क्या मजाल उफ करदे जो जीवन लाता दिल मुर्दों म ।
ये मद बाकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे में ॥

θ ३ θ

जब केशरिया जदा मक्खन चूने का साथ निभाता है ।
सच पूछो खाने से पहिले मुह में पानी भर आता है ॥
पहन मारू बाजा बजता तब कही जोश तन म आता ।
दो पैसे का मक्खन जदा उससे ज्यादा हिम्मत लाता ॥

जो कहते जर्दा मत करो आखिर वे ही पछताते हैं।
भारत में दुम्बे से लेकर दुम्बे तक जर्दा खाते हैं॥
ओठों के लोकिट में ज्यों ही जर्दे का पैकिट जाता है।
उस समय अधर का यह सीधा संगम लोकिट बन जाता है॥

जर्दे का रस फिल्टर होकर ओठों के आगे बढ़ता है।
जर्दे का रंग निरन्तर ही अपने दांतों को रंगता है॥
अपनी आंतों को रंगता है चेहरे पर जर्द चढ़ा देता।
पीला चेहरा, पीला मुखड़ा, पीला ही मर्द बना देता॥
पीलापन यानी गोरापन जो गोरा बनना चाहो तुम।
तो प्रेमपूर्वक श्रद्धा से इस जर्दे को अपनाओ तुम॥

θ ४ θ

वैसे वेदों में लिखा हुआ भिक्षा से दूर सदा भागो।
पर सतों को परमीशन है जिससे चाहो जर्दा मांगो॥
जब चाहे हाथ पसार कहो बाबूजी कुछ जर्दा देना।
मिल जाये तो हंसा-मस्सा वरना चुपके से सह लेना॥
आखिर जर्दा ही मांगा है, जेवर का चाहा दान नहीं।
इंसल्ट-प्रूफ जर्दे वाले इनका होता अपमान नहीं॥
कुछ सदा मांग कर खाएंगे चाहे जितनी महंगाई हो।
उसे खरीदने को सौगंध गंगा के तट पर खाई हो।

जर्दे का थोड़ा शानदार सुन्दरता को सरसाता है।
कवि को जर्दे का पान यहां बस इन्द्र-धनुष दिखलाता है॥
है पान हरा, जर्दा पीला, सुर्ती काली, चूना सफेद।
कत्थे की लाली मिल जाये तो इन्द्र-धनुष में कौन भेद॥
आओ अपनाएं हम जर्दा क्यों रहते गोरखधंधे में।
ये मर्द बांकुरे मतवाले इनको मर्दानी जर्दे में॥



उस्तादों के उस्ताद

भारत में भक्त बहुत मिलते मगल, बुध शुक्र शनिश्चर के ।
उपवास करें, व्रत रखें कथा सुनते कोई पडित वर से ॥
लेकिन इन सबसे श्रेष्ठ जागरण जो हमको करवाते है ।
जो लोग मुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥

θ १ θ

खटमल प्यारे तुम उस्तादो के भी उस्ताद कहाते हो ।
तुम खून चूमने वालो का भी खून चूस ले जाते हो ॥
खुजलाधिपते तुम जहा कहीं भी करते हो अपना विचरण ।
खुजल खुजने खुजलानो का होना है मुफ्त वहा वितरण ॥
जिस होटल म या धमशाल म खटमल जी घुस जाते है ।
तो मुसाफिरो पर अनायास ही शनी देव चढ जाते है ॥
आराम हराम समझकर के खटमल उनको समझावत है ।
भई सोवत है सो खोवत है जो जागत है सो पावत है ॥

सोए खोए भटक प्राणी को कहता है यह जगा जगा ।
टुक नीद से अखिया खोल जरा और अपने रब का ध्यान लगा ॥
सोए समाज को कहता यह देखो सोने मे बरबादी ।
तुम मुझे खून दो मैं तुमको दूगा सोने से आजादी ॥
यह कलियुग है अब नए सूतजो सतोम्बी फरमाते हैं ।
जो लोग मुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥

० २ ०

जब बेफिक्री से बिस्तर पर तुम गाये रहने गोपाला ।
तो प्रकट कृपाला हो मतवाला खटिया में खटमल लाला ॥
साड़ी, ब्लाउज बुशर्ट पैंट सब जगह आप घुसपैठ करें ।
भूमि सारी गोपाल की है रेंगकर आप चरें विचरें ॥
मैं खटमल वाली खाटों पर सोने में जाता हूं कतरा ।
बिजली के खम्भे पर जैसे हो लिखा हुआ कोई खतरा ॥
अब कुछ खुजली की बात करें यह अनुभव मौलिक होता है ।
सारा परिवार खुजाए जब यह दृश्य अलौकिक होता है ॥

कोई पसली खुजलाय रहा कोई बगलें सहलाय रहा ।
मसलें बांह भरते आह कोई—कोई गर्माय रहा ॥
ये बदतमीज खटमल जाने कब कहाँ कहाँ घुस जाते हैं ।
जो लोग मुक्त भोगी उनको खटमल भी क्या सताते हैं ॥

० ३ ०

यों कई आयकर, बिक्री कर मृत्यु कर तक लग जाते हैं ।
पर मुरारजी खटमल जी तो सोने पर टैक्स लगाते हैं ॥
वे स्वर्ण नियन्त्रण करते हैं ये शयन-नियन्त्रण करते हैं ।
वे कामराज से डरते हैं ये काम रात को करते हैं ॥
ये खटमल हैं या नटखटमल ये जिनके पीछे पड़ जाते ।
तो पिंड छुड़ाना मुश्किल बीमा के एजेंट नजर आते ॥
जिस खटिया में खटमल रहते पहले से कोई बतलाए ।
तो तीसमारखां भी उस पर सोने से सचमुच कतराए ॥

तुम चाहे स्वयं सिकन्दर हो लेकिन चपेट में आजाओ ।
तो बस राधे गोविन्द भजो बैठे खुजलाते ही जाओ ॥
नारदजी अपने अनुभव कुछ कमलापति को समझाते हैं ।
जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥

θ ४ θ

अपनी सीमा में सजग रहे होटल सराय इनका मुकाम ।
ये नाइट ड्यूटी करते हैं, आराम लगे इनको हराम ॥
है पूर्ण धर्म-निरपेक्ष आप है जाति-पाति की क्या लगाम ।
हर मुस्लिम से अल्ला-अल्ला, हर हिन्दू में है रामराम ॥

खटमल की किस्में हैं अनेक है भिन्न भिन्न जिनकी खुराक ।
रातों के खटमल से ज्यादा दिन के खटमल है खतरनाक ॥
बढ़िया के खटमल अमर बेल ज्यों खुद ही पलते रहते हैं ।
जो एक बार लग जाए तो पीढ़ी तक चलते रहते हैं ॥

झगड़े की खाटों पर बैठे कितने ही कानूनी खटमल ।
अनपढ़ से डिग्री में ऊंचे कितने डिग्रीधारी खटमल ॥
कुछ खटमल "मे आई हेल्प" कहे पर वैसे तने हुए रहते ।
कुछ "सेवक" खटमल जनता के मालिक ही बने हुए रहते ॥
राशन के खटमल शासन में सच्चा आनन्द मनाते हैं ।
भाषण के खटमल जाने क्यों मोटे ही होते जाते हैं ॥
हैं कोई गेरुए खटमल जो बैठे-बैठे पा जाते हैं ।
जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥



रसवन्ती



घर्ते हो जोवन नीरस है क्या अधिक उसे बेकार करें ?
आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेड़ा पार करें ॥

θ १ θ

ऐ साकी इन दिलवालों को कुछ दिल की दवा पिला देना।
जब मीठा मीठा दर्द उठे हल्का सा जाम दिखा देना ॥
जो कहे शराब खराब बहुत यह लग जाए तो डायन है ।
पर मैं कहता यह फाइन है यह वाइन नहीं डिवाइन है ॥
यह अंगूरों की बेटी है लंगूर स्वाद क्या जानें ?
जो बंदर हैं इस अदरख की कीमत को कैसे पहिचानें ?
कुछ सोचो तो सुरलोक निवासी देव सुरा पीते आए ।
अपना सुरलोक सुरक्षित है जो मदिरा को अपनाए ॥

जो हो गिलास या बोतल में किम् दत्त चटाकट कर्तव्यम ।
पीने वाले मर्तव्यम् तो सिखने वाले भी मर्तव्यम ॥
व्हिस्की ब्रांडी, बीयर तो क्या ठर्रा भी हो स्वीकार करें ।
आओ हम मिल कर अपना और भारत का बेड़ा पार करें ॥

० २ ०

ससार सुरामय हो जिनको वे पीते और पिलाते हैं।
'मधुशाला' के पीछे ही तो कितने बच्चन बन जाते हैं॥
क्योकि मिलती है चलचितवन, पग की थिरकन, दिल की धडकन।
प्यालो चुम्बन, मस्ती का मन, ऐसा शराब का अभिनन्दन॥
चाहे कोई कुछ लिख वाले पीने वालो को फिक्र नही।
दिल लखपतियो सा हो जाता छोटी बातो का जिक्र नही॥
पीकर हो जाते धुत्त आप जब जाने होश हवाश लगे।
अपने को समझे राष्ट्रपति वाकी सारी बकवास लगे॥

बिडला बागड पिद्दी लगते, उन बेचारों का क्या बिसात।
ससार झूमता आँखो म छोटो मोटो की कौन बात॥
जब आप नशे मे धुत्त रह उस समय ताश खेली जावे।
इक्के से लेकर राजा तक बेगम ही बेगम दिखलावे॥
एसे लोगो का 'यथा देव पूजा' म ही सत्कार करें।
आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेडा पार करें॥

० ३ ०

जिस समय झूम कर चलते है मन का मयूर या इठलाता।
सडको पर बिना टिकट के ही भारत नाटयम होता जाता॥
लडखडा रहे हैं पाव कि ज्यो सकस म रस्से पर चलते।
फिर भी चलें स बराबर है, बढ रहे कदम गिरते पडते॥
मुख को आजादी है पूरी धारा चवालिस नही वहा।
इसलिए बोलते जाते है कोमा या पूर्ण विराम कहा?
जो करे रूकावट थोडी सी तो कम कपाली कर लेते।
रुस्तम के चाचा आजाए उसका भी गाली दे देते॥

तुम कभी अकड़ना नहीं सुने जाओ जो भी ये कहते हैं।
दीवानी और फौजदारी इस समय जेब में रहते हैं॥
इस जन्नत देने वालो पर आओ जीवन का वार करें।
आओ हम मिल कर अपना और भारत का बेड़ा पार करें॥

० ४ ०

ये तो मस्ती के मौला हैं, जब जब पीकर के चलते हैं।
अपने को नहीं हजारों में लाखों में एक समझते हैं॥
नुक्कड़ पर जो है लम्प पोस्ट उसस लिपटे बोले वाणी।
लेकर चिराग तुम खड़ी रहो कितनी अच्छी मेरी रानी॥
यदि उस नाली के तीर आप काली कुतिया पा जाएंगे।
तो हाथ फेर पुचकारेंगे फिल्मी संगीत सुनाएंगे॥
बोलेंगे कितनी अच्छी हो घर से बाहर मिलने आई।
हर समय ध्यान रखती मेरा ऐ मेरी श्यामा मन भाई॥

कुतिया बेचारी परेशान पर चाट चूम सहला देती।
इस नए प्रेम अभिनेता को पानी संभवत पिला देती॥
यों लाघव नयनम् नाली शयनम् मस्ती का साकार करें।
आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेड़ा पार करें॥

परिवार नियोजन

शीला लीला चुन्नू मुन्नू राजेश महेश मुरारी हो ।
आधुनिक देवकी आप आठवें बच्चे की तैयारी हो ॥
तो होने दो बेचारे को यह जीव जगत सब मिथ्या है ।
हे अर्जुन चिन्ता रहित रहो जो होता मेरी इच्छा है ॥
बच्चों का होना ना होना यह तो नियति की सधि है ।
पर यहा तीन के बाद अगर चौथा हो तो पाबन्दी है ॥
क्योंकि चौथा बच्चा होना भारत मे विनाशकारी है ।
यह सरप्लस है, बेकार धरा पर भार गरसरकारी है ॥

मानवता के विकास म तो भारत अव्वल ही आता है ।
हर तीन क्षणो में यहा एक बच्चा पदा हो जाता है ॥
यो एक मिनट म बीस और घण्टे म बारह सौ केवल ।
हर साल एक सौ बीस लाख की बढती रहती है टोटल ॥
बच्चे सक्रामक रोग कहीं य फैले अगर महामारी ।
तो चाट जाय कपडे अनाज नेताई और रोजगारी ॥
हमको शास्त्रो के मथन से हो गभ ज्ञान ये प्राप्त हुवा ।
अब लूप पुराणे नारो खडे प्रथमोध्याय समाप्त हुआ ॥

सूतजी कहते, हे मुनीश्वरो हम परचा और बताते हैं।
जिस जिसने लूप लगाया है हम उसकी कथा सुनाते हैं॥
वैसे तो अब ये कलियुग है यार बाकी हो रहती हैं।
बेटियाँ लूप लगवाती हैं माताएं जाती रहती हैं॥
बढ़िया सी मच्छरदानी ज्यों मच्छर पर रोक लगाती है।
यो लूप लगी बच्चादानी बच्चा से हमें बचाती है॥
ये तो फरमाइश गाना है इच्छानुसार तुम लगवाओ।
नकली शीशा की तरह आप जब चाहें तुम निकलवाओ॥

यानी ये अर्द्ध विराम चिह्न है पूर्ण विराम न हो पावे।
खुलजा सिमसिम तो खुल जाय रुकजा सिमसिम तो रुक जाये॥
हम जरा रेडियो खोलें तो यानी उसमें मीठा बाजो।
सब लूप लगाने को कहती मन्त्राणी या कि मेहतराणी॥
हे मुनियो कष्ट निवारण में सर्वत्र लूप ही व्याप्त हुआ।
अब गर्भ पुराणे निरोध खण्डे द्वितीयो ध्याय समाप्त हुआ॥

θ ३ θ

कुछ बड़े मजे की बात हैं, क्या कहना खूब विचारों का।
कुछ छः बच्चों के बाप लाभ बतलाते हैं लघु परिवारों का॥
कुछ मन में सख्त विरोधी हैं, लेकिन सरकारी नौकर हैं।
गुड़ भी खाते जाते हैं वे पर कहते जाते गोबर है॥
यों तो यौवन का समय सभी का होता खूब चुलबुली का।
फिर भी उपदेश दिया जाता है पुरुषों को नसबन्दी का॥
हम नसबन्दी से सहमत हैं ऐसी हो राय हमारी है॥
आओ शिखण्डिया आज महाभारत में विजय तुम्हारी है।

अब जो भी आंखो वाले है, बच्चो की पल्टन से डरते ।
हां जो धृतराष्ट्र सरीखे हैं सौ सौ बच्चे पैदा करते ।
शादी करवाते पंडित जी शायद ये मन्त्र सुनाएंगे ।
दो अथवा तीन बहुत अधिकस्य अधिक म पछताएंगे ।।
ये मुनियो ये वतरणी है जो यहां नहाया शांत हुआ ।
नसबन्द पुराणे प्रयोग खंडे तृतीयोध्याय समाप्त हुआ ।।

θ ४ θ

घर में बच्चो की पल्टन हो कम वेतन म महंगाई म ।
तो फिर भक्ति का योग बने आसक्ति पडे खटाई मे ।।
ज्यादा बच्चा वाले घर में रूखा भोजन ठंडा पानी ।
मोटी माला गोपीचन्दन लेने को फिर हरि की वाणी ।।
जो उनसे कोई कुछ मांगे तैयार जवाब रहे हरदम ।
मंगते मे जो मंगता मांगे जय जय राम जय जय श्याम ।।
इस बेकारी मे अगर आप नसबन्दी लूप लगाएंगे ।
अवकाश मुफ्त आराम मुफ्त ऊपर से रुपये पायेंगे ।।

थोडा सामान तो सुखी सफर थोडा परिवार सुखी जीवन ।
जो थोडे बाल रहे सिर पर तो टाट चमकती है चमचम ।।
अच्छा हो किसी लोमडी की जो पूंछ आपकी कट जाए ।
तो सबको दो उपदेश पूंछ भारी है भद्दी दिखलाए ।।
है बहिनो जिसने कटवाई उसको हां गौरव प्राप्त हुआ ।
संतोष पुराणे गृहस्थ खंडे चतुर्थोध्याय समाप्त हुआ ।।



[illegible]

होठें-टाले

गेलचून में एक धनिक को बुखार था ।
डॉक्टर बोला आप पूर्ण विश्राम करायो ॥
१०६ डिग्री बुखार है, धनिक बोला ।
पिछला विश्व रेकार्ड रहा क्या, यह बतलाओ ॥

[illegible]

प्रमाणपत्र

मैंने पूछा कैसे मृत्यु प्रमाणित करते ?
डॉक्टर बोला इसका क्रम पहिचान यहां है ॥
हृदय बंद हो तभी आदमी मरता लेकिन ।
जवान देखते हो औरत में जान नहीं है ॥

[illegible]

सफल डॉक्टर

एक डॉक्टर की निन्दा दूजा मैं करता,
रोगी बोला जब वह निमोनिया ठहराता ।
सदा गलत अनुमान सिद्ध हो निमोनिया का
रोगी किन्तु टायफाइड से है मर जाता ॥
कहा दूसरे डॉक्टर ने वह बदतमीज है ।
मैंने इतने वर्ष बिताये अनुभव करते ।
मेरे सारे हैजे के रोगी हैजे से
सारे मलेरिया के मलेरिया से मरते ॥

माई डीयर

मेरी मृगनयनी, पिकबयनी मेरी मैना।
हंसावरणी! सुना तनगये उनके नैना॥
बोलो जीवजन्तुओं के ये नाम गिनाकर।
सिद्ध कर रहे हो कि मैं हूँ एक जानवर॥
"नहीं नहीं, माई डीयर," तो भी झल्लाई।
बीबी को माई कहते कुछ शरम न आई॥

॥ ५ ॥

दो या तीन बस

था प्रचार परिवार नियोजन का जब भारी।
तांगे वाले ने सोचा घट जाय सवारी॥
"दो या तीन सिर्फ—बस" वाला बोर्ड लगाया।
तीन सवारी तक ली पूरा लिया किराया॥
दो या तीन सिर्फ चाहे बुड्ढे या बच्चे।
दुबले—पतले, मोटे ताजे पक्के कच्चे॥
मजा उड़ाया किंतु एक दिन हिम्मत हारी।
चार चार मन की आई जब तीन सवारी॥

॥ ६ ॥

मन्त्रणा

"रोग बड़ा गम्भीर बताओ अब तक तुमने
इस प्रसंग में किस उल्लू से बातें की थी?"
डरते डरते रोगी बोला चौराहे के
औषध विक्रेता ने मुझको सलाह दी थी॥
डाक्टर बोला महामूर्ख से करी मन्त्रणा
तो अवश्य ही बात बेवकूफी की होगी।
जी हां, औषधि-विक्रेता ने मुझको भेजा,
इलाज तुमसे करवाने को बोला रोगी॥

0 ७ 0

भिखमगे यजमानो से भगवान बचाये

गल्ती की दे दिया निमन्त्रण, अपने घर पर।
भोजन करने कोई भोजन भट्ट पधारे॥
चार सेर की पूडी सफाचट्ट कर डाली।
साग पात मिष्ठान, मुरब्बे चटनी मारे॥
मैं बोला स्वामी गरीब हू, कृपा कराओ।
जसे तैसे भोग लगा कर लाज रखाओ॥
वे बोले जब बुला लिया है तो खाऊगा।
अब तक रहा रेकार्ड तोड कर दिखलाऊगा॥
मैं बोला वह टूट चुका हम हिम्मत हारे।
वे बोले आने दो थोडे शक्कर पारे॥

मैंने कहा कि नाथ ये बाल गोपाल विकल हैं।
पडितजी ने कहा अभी तो इटरवल है॥
गुस्से मे आ बोला ऐ पडित के बच्चे।
उसने कहा कि आने दो रबडी के लच्छे॥
मैं बोला क्या किसी बात पर जा सकते हो?
वे बोले क्या रबडी और मगा सकते हो?
'कितनी?" 'ढाई सेर किन्तु ये भूल न जाना
रबडी ताजी हो और लच्छेदार मगाना॥"
हाथ जोड कर माफी मागी कुछ समझा कर।
एक सेर रबडी के उनको दाम चुकाकर॥
जाते जाते पर पडित ने वचन सुनाये।
'भिखमगे यजमानो से भगवान बचाये॥"

इसलिए तोंद को नमस्कार

भारत में तोंदल बहुत मिले ये बड़े सेठ ये साहुकार ।
ये मनेजर, ये डायरेक्टर राजा महाराजा, जमींदार ॥
ये बड़े पुलिस के ऑफीसर नेता–मन्त्री भी बेशुमार ।
इनमें ज्यादातर तोंदल हैं इसलिए तोंद को नमस्कार ॥
इसलिए तोंद को नमस्कार ॥

θ १ θ

जो देश तोंद वालों का हैं सर्वत्र वहां पर आनन्द है ।
हर तोंदवान कह सकता है कि वह साक्षात गजानन्द है ॥
इनका है मोटा पेट बात कोई भी हो पच जाती है ।
पर खतरा यही कि कभी–कभी बुद्धि मोटी हो जाती है ॥
दिखने में भारी भरकम हैं पर वजन आपका हल्का–सा ।
बस सिर्फ एक क्विंटल यानी सौ किलो या थोड़ा ज्यादा ॥
इनका है मोटा पेट सब जगह इनको इज्जत मिलती है ।
लेकिन ढाबा में मुश्किल से ही इन्हें इजाजत मिलती है ॥

कारण घर में दो चार फुल्कियों से ही काम चलाते हैं ।
पर कहीं निमन्त्रण मिल जाए आखिर माफी मगवाते हैं ॥
ये मोदक प्रिय । इन्हे मिठाई मिल जाए तो चरभर है ।
ये इनका मोटा पेट मिठाई का तो स्टॉक रजिस्टर है ॥
मुझको तो जब ये मिलते हैं मैं करूं दूर से नमस्कार ।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार ॥

कुछ तोंदें होती पानीली नीचे को ढलकी जाती हैं।
कुछ किन्तु आधुनिक नारी सी जो तनी हुई दिखलाती हैं॥
कुछ एक तरफ़ो या झुकी हुई ज्यों मधुमक्खी का छाता हो।
कुछ चौड़ाई में हैं कमाल तरबूजा भी शरमाता हो॥
गोलाई में हैं तूंबे सी फूली है किसी मटकिया सी।
नीचे को कहीं-कहीं झूली ज्यों मूंज पुरानी खटिया सी॥
कोमलता में है फ़ेदर सी पहित की हो या मुन्ने की।
तुम इसे दबाओ फूल जाय होती स्पंज रसगुल्ले सी॥

श्री तोंदनाथजी सोए हों और नजर तोंद पर अटकाएं।
तो गोल गोल ये पेट हूबहू दुनिया का ग्लोब नजर आए॥
तकिये के बल पर बैठ हों और पत्र कभी लिखना चाहें।
तो तोंद डेस्क का काम करे कितनी आसानी हो जाय॥
यह तो बस एक नमूना है या कई तोंद के चमत्कार।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार॥

θ २ θ

बनियान आप दरजी से ही देकर के नाप सिलाते हैं।
कारण कि बने बनाये तो मुश्किल से ही मिल पाते हैं॥
मिल भी जाए तो फंस जाए और रहे तोंद के ऊपर ही।
उभरे सोने पर या लगता जैसे हो चोली औरत की।
या तो कमनीय औरत ही दो कदम चल थक जाती है।
या फिर मासूम तोंद वालों को भी थकान आ जाती हैं॥
आ जाय पसीना हांफ जाय, पुट सूख जाय जब आप चलें।
फिर बैठ जाय फिर हवा करें, क्या खूब नजाकत के पुतले॥

पानी जो डटकर पिया हुआ और चलने की नौबत आती ।
तो ढकलक ढकलक हो जसे अधजल गगरी छलकत जाती ॥
य गोलाकार तन विस्तारम उदर भार है अपार ।
इनके आगे दुनिया भुकती इसलिए तोंद को नमस्कार ॥

θ ४ θ

जब दरवाजा म घुस आप तिरछे हो अन्दर आते है ।
अपनी खटिया को खातो से स्पशल हो बनवाते है ॥
सोए रहते है आप नाक से बाजा बचता जाता है ।
और पट धोकनी के समान उठना और दबता जाता है ॥
जब कभी बदल लेते करवट खटिया की शोमा बिक जाती ।
चरमर चरमर चू चरमरर कुछ ऐसा करने लग जाती ॥
जब कभी दौडन लग जाए तो भारी तन से यो भागे ।
ज्या भस भिडक कर भाग रही मोटर या लोरी के आग ॥

पर मुझको तो उम समय तोद की थिरकन लगती है प्यारी ।
उस समय तोंद क नतन पर मेरी ये कविता बलिहारी ॥
चलती या सस्ती कुर्सी पर जो आप अचानक बठ जाय ।
अच्छा हो उसी समय कोई फोटोग्राफर भी पहुँच जाय ॥
तो पोज अनोखा मिल जाए कुर्सी म अटके उदर-भार ।
इनके आगे दुनिया भुकती इसलिए तोद को नमस्कार ॥

θ ५ θ

श्री तोंदनाथजी सोए हो तो बच्चे घिर कर आते हैं ।
और उचक उचक कर तोद स्थल पर चट सवार हो जाते हैं ॥
फिर कभी गुदगुदी करते है चढते हैं उतरते हैं ।
नाभी में अगुली डाल घडी में जसे चाबी भरते हैं ॥

हर तोंद सुहानी होती है, हर तोंद लुभानी होती है।
उतनी ज्यादा आकर्षक जितनी अधिक पुरानी होती है॥
यह तोंद राष्ट्र की सम्पत्ति या कि धरोहर और अमानत है।
जो इसे सम्हाले नहीं तो फिर हर तोंदवान पर लानत है॥
इसलिए राष्ट्र का काम समझ खतरों से इसे बचाते हैं।
सर्दी में ये मद्रास और गर्मी में शिमला जाते हैं॥
पंखों की हवा खिलाते हैं गद्दों पर इन्हें सजाते हैं।
यों पाल पोस कर तोंदों को बेचारे कहीं फुलाते हैं॥

देने लग जाए राष्ट्रपति यदि पदवी एक तोंद-भूषण।
तो फुला फुला कर तोंद बढ़ाएं ये भारत का आकर्षण॥
उस समय अगर ये मिलें करूं मैं और दूर से नमस्कार।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार॥

दो मानचित्र

हे विश्वपति !
हे जगद्गुरु !
सौंदर्य-प्रकृति—
दत्त पुत्र। हे ! विश्व-मित्र
सामर्थ्यवान।
हूं नत मस्तक,
तेरे सम्मुख,
नव भारत के हे मानचित्र !
जिस भव्य सरोवर पर
मुक्ता चुनते थे, कभी हजारों हंस धवल स्मित से।
अब उसी धरा पर
कुत्स कुकर्मी, व्यभिचारी
ज्यों, महाप्रलय के दिन
धरती पर, रक्त, मांस पिण्डों पर
घिर आते हैं,
गिद्ध झुण्ड।
प्रत्येक दिवस
ललनाओं के
लुट जाते अगणित चीर
विषैले-वाग्-बाण
बहनों को, शायद मिल जाते
रक्षाबंधन के
बिन मांगे नगदी पुरस्कार।
औ' प्रणय-पत्र काम-उक्त
लिखे जाते हैं, निज भगिनी का
शोर। शोक है। महाशोर॥
नाले, गदले के ढेर, नालियों के समीप
जो यदा कदा सबत्र पड़े रहते हैं

इनके 'पाप चिह्न'।
मैंने देखा।
भगवान
तुम्हारे घर में भी
गऊओं का छद्म रूप धर कर
हत्या करते, छली भेड़ियों को।
कुछ नगरपति, कुछ नगरपिता
करते सुधार
सैद्धांतिक, वे आदर्शवान।
समता के युग की
जनता में करते पुकार
उनको भी देखा
नगर वधू के घर पर
करते सुरा पान
पूछा—तो बोले
समता का युग है'
सभी बराबर है
शर्बत पीवो या
लो हलका सा 'सुराजाम'
'अपनी दृष्टि में कोई भेद नहीं है
मंदिर हो या मयखाना
बात वही है।

२१ नवम्बर '५८

भारत का भविष्य

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है।

जब भिखमंगे भीख मागना पाप समझकर पछतायेंगे।
वे अपने श्रम से अर्जित कर ही अपनी रोटी खायेंगे।
फुटपाथो पर जिन्दा लाशें नही पडेगी तुम्हे दिखायी।
भूख विदा होगी भारत से कूड, कपट जाने वाला है।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है।

दान दक्षिणा छोड देश के सब साधु श्रमदान करेंगे।
गाव गाव मे घर घर जाकर राष्ट्र प्रेम निर्माण करेंगे।
नही मिलेंगे तुम्हे सुलफिये चिलम बाज साधु सन्यासी।
भगवे कपडे पहन देश मे बापू फिर आने वाला है।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है।

चम्बल सतलज नहर भाखरा खेतो मे अमृत सीचेंगी।
सूखे राजस्थान तुम्हारी धरती माता तब रीझेगी।
फसल बसंती ओढ ओढनी खेतो मे छम छम नाचेगी।
देख गाव की भोली कन्या लोग कहेंगे सुरबाला है।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है।

भारत का कश्मीर मुकुट है अन्तिम दम तक हम ले लेंगे।
पडी जरूरत तो लोगो के फौजी शासन मे खेलेंगे।
कसम हम बापू की है हम गोआ को आजाद करेंगे।
चला गया अग्रेज, फास अब पुर्तगीज जाने वाला है।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है।

चोरी और डकैती हत्या, जो तस्कर व्यापार करेंगे।
अधिक मुनाफाखार देश की फासी पर झूला झूलेंगे।

परिवर्तन

हम चाहे तो इस धरती को फिर से स्वर्ग बना सकते है।

हमने अब तक इस धरती को
केवल मिट्टी ही जाना है।
इस मिट्टी मे भारत का
अभिमान छिपा कब पहिचाना है।
इसकी नदियो का जल अमृत
कितने मुर्दे जिला चुका है।
खड़ा हिमालय, कितनी बीती
बातें हँस कर भुला चुका है।
कहते थे सोने की चिड़िया
भारत को कुछ नीच लुटेरे।
सोमनाथ पर क्या लेने को
किसने क्यो डाले थे डेरे।
इसका मतलब साफ यही है,
धन्य धान भरपूर यहा था।
उस युग मे यह देश भूखमर
जीने को मजबूर कहा था।

ये बीती बातें तो क्या, हम फिर से वे दिन ला सकते हैं।
हम चाहे तो इस धरती को फिर से स्वर्ग बना सकते हैं।

इसके लिए हमे अपना श्रम,
खेतो को अर्पित करना है।
अकर्मण्य रह कर औरो की
भिक्षा पर कब तक पलना है।
कुछ तो सोचो आखिर हमने
उस धरती पर जन्म लिया है।
जिसने दे सर्वस्व विश्व को
बदले मे कुछ नही लिया है।

दते थे हम दान विश्व को
पर लेना हमको खलता था।
कहते हैं इतिहास, विश्व सब
इसकी भिक्षा पर पलता था।

बीत गई वे बातें तो क्या हम फिर से वे दिन ला सकते है।
हम चाहे तो इस धरती को फिर से स्वर्ग बना सकते हैं।

अभी नहीं भारत की धरती
बूढ़ी पर बुढ़िया सी लगती।
विश्वपति भारत जीवित तो
पत्नी क्यों विधवा सी लगती।
इसके खातिर हम ज्ञान की
फिर से ज्योति जलानी होगी।
अधिक परिश्रम कर बेकारी—
के संग भूख भगानी होगी।
हरी भरी भारत की गोदी
केवल श्रम ही कर सकता है।
अधिक उपज कर अन्न देश के
सब दु:खों को हर सकता है।
क्योंकि हम चाहे तो छू कर पत्थर को पिघला सकते हैं।
हम चाहे तो इस धरती को फिर से स्वर्ग बना सकते है।

२४ अगस्त ५६

आस्था का स्वर

स्वप्न को साकार करना है हमे ।
इस धरा से प्यार करना है हमे ।।

आस्थाए है अभी जीवित सभी,
मान्यताए हैं अपरिवर्तित अभी ।
हम न हारे है अभी उत्थान का—

रास्ता आसान करना है हमे ।
इस धरा से प्यार करना है हमे ।।

श्रम हमारा व्यर्थ जाने का नही,
अब अँधेरा लौट आने का नही ।
आ रही है भोर अब इस रात को—
कर विदा अभिसार करना है हमे ।

स्वप्न को साकार करना है हमे ।
इस धरा से प्यार करना है हमें ।।

सो रहे हैं जो उन्हे आवाज दो !
लडखडाते चरण को तुम थाम लो !
सकडी पगडडियो का आज फिर—

खोद कर विस्तार करना है हमे ।
इस धरा से प्यार करना है हमे ।।

बेसुरे स्वर मागते है एकता,
खोद खाई गाड दे हम विषमता।
एक स्वर गूजे हमारे गीत मे—

इस धरा से प्यार करना है हमे ।
स्वप्न को साकार करना है हमे ।।

१८ सितम्बर ६६

पौरुष-पूजन

मैं प्रण का प्रतिभा का, पौरुष का पूजक हूं।
मुझ से कभी न, भय का पूजन हो पायगा॥

तुम उर का दौर्बल्य
अहिंसा से ढकते हो,
बस असमय विवशता
ही है क्षमा तुम्हारी
शांति, सिर्फ आध्यात्म—
पुस्तकों की शोभा है,
बहरा बल ना समझ
सकेगा व्यथा तुम्हारी।

मैं छल का बल से उपचार किया करता हूं।
मुझसे कभी न छल का प्रचन हो पायगा॥
मैं प्रण का प्रतिभा का, पौरुष का पूजक हूं।
मुझसे कभी न, भय का पूजन हो पायेगा॥

किया शक्ति का बहुत
निरादर सिद्ध हो गया
है घायल भूगोल
मौन इतिहास हुआ है।
आदर्शों के ये कंपित
स्तम्भ तोड दो—
अगर हुआ इनसे
केवल परिहास हुआ है

मैं जन का, जन के जीवन का उद्‌बोधन हूं।
मुझ से कभी न मूक समर्पण हो पायेगा।
मैं प्रण का, प्रतिभा का, पौरुष का पूजक हूं।
मुझ से कभी न भय का पूजन हो पायेगा।

तुम कल के कल्पित—
सपनों पर आज जी रहे।
मेरा लक्ष्य वही है
जो कुछ आज हो रहा।
कल कल का कल क्या होगा
इसका किसे पता है?
वर्तमान किसलिए हमारा
आज रो रहा?

मैं स्वदेश का एक अपर बल युग प्रवाह हूं।
मुझ से कभी न व्यर्थ - समर्थन हो पायेगा।
मैं प्रण का, प्रतिभा का, पौरुष का पूजक हूं।
मुझ से कभी न भय का पूजन हो पायेगा।

बजा चुके हम बहुत
घुंघरुओं का तबलों पर।
अब मुझको रणभेरी
तनिक बजा लेने दो।
बन्द करो ये प्रेम कथाएं
फिर लिख लेना।
पहले मुझको गीत
विजय के गा लेने दो।

मैं गुण का गरिमा का, गौरव का गायक हूं।
मुझ से कभी न नट सा नर्तन हो पायेगा।
मैं प्रण का प्रतिभा का, पौरुष का पूजक हूं।
मुझ से कभी न भय का पूजन हो पायेगा॥

भारत मा का लाल जवाहर

यही कही यमुना के तट पर भारत मा का लाल खो गया ।

जिसकी वाणी मे गीता का
कृष्ण सदा बोला करता था ।
जिसके उर मे हिन्द महासागर
हर दम डोला करता था, ।
जिसका पौरुष अडिग अटल था
सत्य शान्ति का था विश्वासी, ।
जिसके दर्शन को रहती थी,
सष्टि की आशाए प्यासी ।
आशाओ का दीप बुभा तो, धरती का विश्वास खो गया ।
यही कही यमुना के तट पर भारत मा का लाल खो गया ॥

लपटो को जिसने दीपो की,
ज्योति के साचो मे ढाला ।
मानव के मूल्यो को जिसने
सदा सजोकर उर मे पाला ।
जिसकी उ गली को छूते ही,
स्वय साज बजने लगते थे ।
जिसकी सेवाओ के आगे,
सम्राटो के सिर भुकते थे ।
ऐसा साधक सत्य जगा कर, चिर निद्रा म स्वय सो गया ।
यही कही यमुना के तट पर भारत मा का लाल खो गया ॥

जिसको खो कर हिम क्या पिघली
पाषाणो के उर पिघले हैं ।
विषधारी सापो के मुख से
अमृत के स्रोते निकले हैं ।

एक सितारा जिस दिन भू से,
उठ कर नभ की ओर चला तो,
उस दिन करुणा ही क्या पिघली,
मृदुता का आचल भीगा था।

जन जीवन का एक चितेरा शिव सुन्दरम् आज हो गया।
यहीं यहीं यमुना के तट पर भारत मा का लाल सो गया॥

गीत

मुझे जिन्दगी से, है बेहद मुहब्बत,
मगर मौत से भी शिकायत नही है।
समझता हूँ दुनिया वो दरिया है जिसके
किनारो पे कायम न लहरें रहगी।
जहा किश्ती होगी, थपेड भी होगे
य मान्यो की मुश्किल हमेशा रहेगी।
मगर यह नही कि मैं जुल्मो के आगे
हू बुजदिल या दिल म बगावत नही है।
मुझे जिन्दगी स है बेहद मुहब्बत
मगर मौत से भी शिकायत नही है।
झुकाया है मैंने सदा सिर बुतो को,
न डरकर के बल्कि शराफत समझकर।
मैं तयार हू, खू बहाने को अपना
हुक्म पर नही पर हिफाजत समझकर।
मगर यह नही कि किसी आदमी को
परखने की मुझ मे लियाकत नही है।
मुझे जिन्दगी से है बेहद मुहब्बत
मगर मौत से भी शिकायत नही है।
चला जा रहा हू, मैं मस्ती मे अपनी
न मजिल है मेरी ठिकाना नही है,
जहा थाम लूगा मैं परो को अपने
समझ लूगा मजिल, ठिकाना यही है।
मगर यह नही राह की मुश्किलो से
बढने की मुझ मे ताकत नही है।
मुझे जिन्दगी से है बेहद मुहब्बत,
मगर मौत से भी शिकायत नही है।

१३ अगस्त ५९

अपराध

है मेरा दोष यही, कि मैं
सोये मजलूम जगाता हू।
जब देख लिया करता हू कि
पानी से सस्ता खून हुआ।
इन्साफी-फर्ज-महज पुस्तक का
लिखा हुआ मजमून हुआ।

शोषक के तबले महलो मे
जब घिन घिन तक-तक करते हैं।
कुछ नाग भूख से व्याकुल हो
जब पडे सिसकिया भरते हैं।
तब शब्दों की मैं चिता बना
शोषण की लाश जलाता हू।
है मेरा दोष यही, कि मैं
सोये मजलूम जगाता हू।

जब राजनीति पर चील,
गिद्ध, कौए मडराया करते है।
नकली सिक्को पर चादी के
जब खोल चढाये जाते हैं।

जब जन जन के विश्वासों की
काया कुम्हलाने लग जातीं।
या जब मानवता सरे आम
बाजारों मे बिकने आती।
तब चीख-चीख चिल्लाकर मैं
बहरों को बोल सुनाता हू।
है मेरा दोष यही, कि मैं
सोये मजलूम जगाता हू।

जब हो जाता कोढ़ी समाज
हर घाव कुरीति बन जाता।
सड़ांध रोग भयंकर सा —
सारा ढांचा ही सड़ जाता।
उन घावों पर मक्खी, मच्छर
आ बैठ भिनकने लगते हैं।
उस तीव्र वेदना से समाज के
प्राण तड़पने लगते हैं।
तब मैं समाज के उस मड़ियल,
ढांचे को तोड़ गिराता हूं।
है मेरा दोष यही कि मैं
सोये मजलूम जगाता हूं।
या राष्ट्र नींव को जब चूहे
बिल खोद हिलाने लगते हैं।
या सांपों को कुछ लोग
भूल से दूध पिलाने लगते हैं।
या गधे ज्ञान में पारंगत
समझे जाने जब लग जाते।
या जब उल्लू ही अंधकार के
देव समझ पूजे जाते।
तब मैं अंधों को राह बता
पथ कंटक दूर हटाता हूं
है मेरा दोष यही, कि मैं
सोये मजलूम जगाता हूं।

जुलाई '५७

विस्फोट

अधिक व्याधि सह चुकने पर अब यही कलम तलवार बनेगी
उर भोली लेकर घूमूंगा
भिक्षा पाने—
जाऊंगा सतप्त घरों पर
आहो, आंसू भर लाने
उसका बम्ब बनाऊंगा—
वैभव के सब प्रासाद गिराने
कीले गाड़ूंगा मैं फिर से—
मणि मंडित सब सिंहासन मे
देखूंगा कितनी ताकत है ?—
इन सबके फौजी शासन में

मेरी आहे धक धक जल कर, इन सब का विस्फोट करेंगी
अधिक व्याधि सह चुकने पर अब यही कलम तलवार बनेगी।

गरल पिलाया था मुझको
औ' कहा अमी है तुम पी जाओ
मैं भी था मजबूर वक्त उस
किया यही क्या न्याय बताओ ?
उसी गरल को उगलूंगा मैं
उसी गरल से उन्हें गलाने
जो आग लगाई थी मुझ पर
वह आग जलेगा, उन्हें जलाने

मेरी हसरत शव पर उनके, खड़ी खड़ी अट्टहास करेगी
अधिक व्याधि सह चुकने पर अब यही कलम तलवार बनेगी।

बहुत खोजता रहा यहीं—
कोई मुझको मानव मिल जाये
गया कहीं उस ओर वहीं—
मुंह बाये मैंने दानव पाये

तभी उठी चित्कार हृदय में
ओ संसार बसाने वाले
क्या यही तुम्हारे हैं मानव
दौलत में न्याय मिटाने वाले।
मेरी हसरत ही मिटकर नव जीवन का आह्वान करेगी
यद्यपि व्याधि सह चुका पर अब यही कलम तलवार बनेगी।

२८ मार्च ५६

कुछ रुबाइया

मिजाजे गम अहले दोस्त मुझे कहते हैं।
दावते खश पिया कर, यह सलाह देते है।
मगर ईमान से कहना, ऐ दुनिया वालो—
जो नही गम, उसे कौन, अरुण कहते हैं।

जो रहूं चुप तो वो कहते हैं क्या जवान नही।
कहू कुछ इस पे बिगडते हैं कि लगाम नही।
अजब है हाल 'अरुण' अब दवा करे कोई—
ये है वो मज कि हिकमत में जिसका नाम नही।

जलवे तूफान के हमने हजारो देखे हैं।
उगलते आग वो पहाड हमने देखे है।
लगा करती है 'अरुण' आग जिसके पानी से—
मेरी आखो ने कुछ ऐसे तलाब देखे हैं।

दद बन के किसी के हम जियें तो क्या यारो।
किसी को खा के पेट भर लिया तो क्या यारो।
मजा तो जब है अरुण खुद मिटे हो नेकी पर—
कोई अफसोस नही कम जिय तो क्या यारो।

गदन मेरी छुरी तुम्हारी चला के देखो।
बन्दा हाजिर है, जोर आजमा के देखो।
जलू गा मैं क्या 'अरुण' हू किसी जलाने मे—
जो ऐतबार नही तो जला के देखो।

शेर कहता हू मैं सुनता हू मजा लेता हू।
इस तरह उम्र को आसान बना लेता हू।
काबिले दाद मेरे शेर नही तो न सही—
मैं सुखनवर न सही बात तो कह लेता हू।

मुझे मत सताओ, सताया हुआ हूँ।
जवानी में नाहक रुलाया गया हूँ।
दिखाते हो मुझको, क्या इन खजरों को—
मैं खुद मौत के घर से आया हुआ हूँ।

हमारे सामने बहती हवाएं रुक जाती।
हमारी इक अदा पे, खुद अदाएं झुक जाती।
मिले हो एक ही दुनिया में 'अरुण' ऐसे तुम—
(कि) जिसके सामने नजरें हमारी झुक जाती।

अप्रैल '५७

विवशता

मैं अपनी बीती सुधियों को कैसे भूलूं तुम्ही बता दो।

मेरे हर निर्दोष स्वप्न को
कटुता की कारा ने घेरा
मेरे श्वास श्वास पर प्रतिपल
छाया है यह क्रूर अंधेरा
मेरी नौका इस सागर की
लहरों से हर बार लड़ी है
जड़ता को मर्दित करने वह
भंवरों में हर बार पड़ी है
मैं अपने इच्छित कूलों को कैसे ढूंढू तुम्ही बता दो।
मैं अपनी बीती सुधियों को कैसे भूलूं तुम्ही बता दो।

नव विहान के ये स्वर्णिम क्षण
मन का शतदल खिला न पाये
तृषित हृदय की सतृष्णा को
बरसे घन पर बुझा न पाये
इस पर भी दूरागत कोई
पगध्वनि मुझ को हेर रही है
विगत गीत की धुन पछी बन
नभ से मुझको टेर रही है
मैं अपने इस अद्भुत पथ से कैसे लौटूं तुम्ही बता दो।
मैं अपनी बीती सुधियों को कैसे भूलूं तुम्ही बता दो।

आलोकित करने प्रतिमायें
मैं पुलकित हो खूब जला हूं
और मूक अर्चन हित उनके
बन अश्रु उपहार ढला हूं

किन्तु अर्चना हाय ! अभागी
पाषाणों को रिझा न पायी
अभिशापों के सिवा मुझे व
वरदानों को दिला न पायी
मैं पत्थर की य प्रतिमायें कब पूजूँ तुम्हीं बता दो।
मैं अपनी बीती सुधियों को कैसे भूलूँ तुम्हीं बता दो।

प्रलय के घन

सुन रहा हू कि, प्रलय के घन गगन मे छा रहे है।

कालिमा नीले गगन मे,
व्याप्त थी, अब बढ रही है।
विष-भरी पश्चिम दिशा—
की ओर आधी उठ रही है।
एटमी विद्युत चमक कर—
कर रही सकेत मानव।
मौत का पैगाम ले शैतान आगे बढ रहे हैं।
सुन रहा हू कि प्रलय के घन गगन मे छा रहे हैं।

हड्डियो पर अतडियो के
तार कस कर कौन दानव!
पसलियो पर अगुलिया रख,
स्वर मिलाता जा रहा है
दानवी-लय बेसुरी बन,
कर रही सकेत मानव।
दानवो की वीण बन ककाल बजते जा रहे हैं।
सुन रहा हू कि प्रलय के घन गगन म छा रहे हैं।

मानवी की माग का सिन्दूर ढाने
हाथ किसका बढ रहा है ?
विश्व मा की गोद की
सूनी बनाने।
क्योकि मुझको दिख रहे हैं
झाडियो की ओट मे कुछ ?
भेडिये पू खार, मानव को चबाते जा रहे हैं।
सुन रहा हू कि प्रलय के घन गगन मे छा रहे है।

आसमाँ क्या मौन होकर,
देखते हो दृश्य लीला ?
फट पड़ो धरती नहीं मैं
चाहता हूँ और जीना
क्योंकि मुझ को ये चिताएँ
कर रही सचेत मानव
अलविदा हम तो तुम्हारी छोड़ दुनिया जा रहे हैं।
सुन रहा हूँ कि प्रलय के घन गगन में छा रहे हैं।

२१ सितम्बर ५६

अतीत की याद

विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ

स्वप्न था वह अब न उसको
सत्य मे परिणत करो तुम,
सामने मेरे अपरिमित को
पुन परिमित करो तुम।
थाम पाया हूँ कठिनता से कगारो मे समन्दर --
अब न मेरे शान्त सागर मे नया तूफान लाओ।
विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ।

अब नही ऊषा गगन मे--
रात है काली सिहायी।
झड रहे हैं फूल, तारे --
अनमने देते विदाई।
रोक पाया हू, कठिनता से हृदय की पीर रोकर
अब न मेरे सामने गायक मिलन के गान गाओ।
विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए मत याद आओ।

बन गये वे दिवस मेरी--
जिन्दगी के अब सहारे।
और वे अभिशाप लख
वरदान से मैंने बिसारे।
सीख पाया हू कठिनता से जहर के घूट पीना--
तृप्त हू मत बाध्य कर अब और यह अमृत पिलाओ।
विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ।

तुम दिलाते याद बीती--
बात कह कर, 'तुम वही हो'
मन बताता, तन वही पर
तुम नही 'जो थे' वही हो

भूल पाया हू, कठिनता से स्वय को मैं नशे म।
छोड दो मुझको नशे मे, होश मे मुझ को न लाओ।
विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ।

मानता हू कि अधूरी ही—
रही मेरी कहानी।
मानता हू सिसकती —
रोती पली मेरी जवानी।
समझ पाया हू कठिनता से अधूरे इस जगत को
वह अधूरी ही कहानी मत मुझे फिर से सुनाओ।
विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए मत याद आओ।

दुर्दशा

तुम जितना घर को बाहर से पुतवाते हो
उतना ही भीतर कल्मष बढता जाता है।

इस घर को ईश्वर का—
घर लोग समझते थे।
हर रहने वाला इसमे
पूजा जाता था।
इसके ज्योतिर्मय थे —
आलोकित सभी कक्ष।
इसका हर कोना
स्वर्ग बताया जाता था।
इसके आगे पीछे
गरिमा की सरिताए
बहती थी मन्थर गति से
कुछ सकुचाती सी।
अब जहा स्वान रोते हैं
दिन मे चीख चीख,
उस जगह वेद की ध्वनि
कानो में आती थी।
तुम जितनी राहें नई हमें दिखलाते हो
उतना ही पथ कटकाकीर्ण हो जाता है।
तुम जितना घर को बाहर से पुतवाते हो
उतना ही भीतर कल्मष बढता जाता है।

लेकिन अब देखो क्या
होता है इस घर में ?
कर रहा अ धेरा राज्य
यहा आजादी से।
बन गयी उल्लुओ की

हर होली दीवाली।
जन जीवन लडकर
जीता है बरबादी से।
है लीन मकडिया
उल्टे जाल बिछाने में,
निर्दोष पतगो को
उसमें उलझाने को
झिंगुर चिल्लाते हैं।
चीं चीं कर जगह जगह,
घरों के छातों को
फिर से भडवाने को।
नर रक्त यहा के पिस्सू
पानी सा पीते,
हर चेहरा दिन प्रति दिन
पीला होता जाता।
क्या कहे तुम्हारे
अनुशासन की ओर भला।
जब घर मे आकर
गीदड बच्चा ले जाता
तुम जितने गड्ढे ऊपर मे भरवाते हो
उतना ही भीतर पोलापन बढ जाता है
तुम जितना घर को बाहर से पुतवाते हो
उतना ही भीतर कल्मष बढ़ता जाता है।
कर रही बिल्लिया।
दूध दही का देख यहा
खेतों की रखवाली
पशुचर कर लेत हैं।
अपन दाटा की जेना
को य हाय सभी,
मनजाने ग ही भूल
यहा भर लेन हैं।

हैं वफादार कुत्ते ऐसे
जो चोरो को,
खुद न्यौता देते हैं
आ लूट मचाने को।
इस घर के दीपक
आतुरता से सोच रहे
इस घर को अपने हाथों,
आग लगाने को।
माना-घर की-दीवारें
है मजबूत मगर।
भीतर की ईटें तो
आपस मे लडती हैं।
इस घर की नीवों मे
चूहे बिल खोद रहे
सापो की कई टोलिया
निर्भय फिरती हैं।
तुम जितनी बाहर
फली आग बुझाते हो।
उतना ही घर मे
ताप-प्रबल हो जाता है॥
तुम जितना घर को बाहर से पुतवाते हो
उतना ही भीतर कल्मष बढता जाता है।

इस घर ने मुझ को जन्म दिया,
मैं पला यहाँ खेला कूदा हूं
अन्न यहा का खाया है।
इस घर म रहने वाले के नाते मैंने,
जो देखा, सोचा, समझा, सो बतलाया है॥

श्राज की सीता का हरण

आ वात दशेरे रे दिन री,
म्हे रावण जगतो देख्यो हो ।
पाछो आ रोटी खाई ही,
सारणःस आटो होग्या हो ।

बी वखत फेर आयो खयाल,
ओ रावण क्यू हर साल जळ ?
उत्तर मिळिया बी पापी रो
ओ दम्भ और अभिमान बळ ।

आ वात सोचते माचे पर
म्हारे ऊपर आघी फिरगी ।
सुपने मे मैं के देखू हू, के —
बठे राम री सभा जुडी ।

बठा हा राम सिला माथे,
लिछमण जी जमीं कुरेदा हा ।
हनुमान हाथ जोड्या ऊभा,
गगद जी लफ गयोडा हा ।

भगवान कह्यो मैं सीता ने
लडकर पाछी लेणी चावू ।
मैं बी पापी री कुमद काढ,
सद्‌बुद्धि वस देणी चावूं ।

आ बात सुणी सें जोधा रे
ऊपर सरणाटो सो फिरग्यो
लिछमण बोल्यो कोनी
लेकिन दो हाथ जमी मैं
वो धसग्यो———

सगळा मन मे श्रा सोचे हा
श्रव किया राम ने समझावाँ
वो रावणिये स्यूं लड्या विना
सीता पाछी कूं कर लावां।

जद जोधो बोल्यो जामवन्त,
कोर रोणे स्यू सुणे राम—
सीता पाछी ना श्रावेली,
श्रा रही सही इज्जत थारी,
सं मिट्टी मे मिल जावेली।

क्यू के सीता जद गरळावे
रावण वाने समझावे है।
सीता श्रो राम दूसरो है,
ईन लडनो कोनी आवे।

जे तू म्हारी होवे सीता,
जीवण रो सुख तू भोगे ली।
जे गई राम रे साथे तो,
भूखी जगळा मे डोले ली।

है राम खने खाली ताकत,
भाषण री श्रर उपदेशा री।
वो कोरी चिठ्या लिख जाणे
लका है वीर नरेशा री।

पण थे म्हारी श्रब सुणो राम,
थारी सेना ने त्यार करो।
रावण लटने श्रावे जिसू
थे पला वो पर वार करो।

हनुमान वीर सुग्रीव पुत्र,
रण वका साथे है थारे।
चालीस कोटि बानर सेना,
चढगी तो स राखस भागे।

सँ जामवंत री ज बोली,
जोधा सगळा ऊभा होग्या ।
आ बात समझग्या रामचन्द्र
लड़ने खातिर राजी होग्या
श्रे बात्या सुण रघनाथ कह्यो वो पापी नरक सिधावेलो
तू चिंता मत कर जामवंत वो दिन जल्दी ही आवेलो ।

अप्रेल '६३

आशंका

इस ठंडे से उदित सूर्य से जाने कैसे?
नभ में फैला दूर अंधेरा हो पायेगा।

कैसे ढीले तारों पर
स्वर सध पायेगा।
कैसे बौनी भावुकता
नभ छू पायेगी।
कैसे चू कर मधुमय
ये अमृत की बूंदें।
विष के सागर का
परिवर्तन कर पायेंगी।
इस निर्मल चंदा की भोली चन्द्र द्युति से,
कुटिल-कुचाली राहु कैसे छला जायेगा?
इस ठंडे से उदित सूर्य से जाने कैसे?
नभ में फैला दूर अंधेरा हो पायेगा।

आज सुभद्रा का सुत
व्यूह में फंसा हुआ है।
सिर्फ शिखण्डी से
बाहर ना आ पायेगा।
भीम बढ़ो आगे—
अर्जुन गाडीव संभालो!
रुंधे कंठ से शायद,
शंख न बज पायेगा।
दर्शन के इन उपदेशों से जाने कैसे?
दुर्योधन का अहंकार क्या गल जायेगा।
इस ठंडे से उदित सूर्य से जाने कैसे?
नभ में फैला दूर अंधेरा हो पायेगा?

दुग है गंगा यमुना की
पावन भूमि पर।
पानी के दुग से
हर पौधा झूम रहा है।
दुग है, हर दीवार
मिथुन का तेज मांगता।
दुग है मानो स्वयं
किनारा भूल रहा है।
सुनो साथियो नौकाओं के पाल बदल दो।
तूफानों का दास स्वयं ही बन जायगा।
इस ठंडे से उदित सूर्य से जान बचे ?
नभ में फैला दूर अंधेरा हो पायगा ?

अगर स्वप्न ही रहे,
देखते लाल वाला।
तो स्वर्णिम यह रात
ऊंघते ढल जायेगी।
लुट जायेगा भाग्य
नवेली इस दुलहिन का।
श्रम से निर्मित यह
तस्वीर बदल जायेगी।
मक्खन की चोटों से कस पाषाणों का
खंड-खंड हो चूर धरा पर बिछ जायगा।
इस ठंडे से उदित सूर्य से जान बचे ?
नभ में फैला दूर अंधेरा हो पायेगा ?

१३ सितम्बर ६५

डोलती नौका

यह नाव न छू पायेगी, कभी किनारो को।
जब तक इसका यह पाल न बदला जायेगा।
इसके पेंदे को अब भी घुनती है दीमक,
जो जानबूझकर, स्वयं नाविको ने पाली।
भर दिया विदेशी माल, मूर्खों ने इतना—
यह चल न सके, इतनी बोझिल है कर डाली।
ये सड़े गले शहतीर तख्तियां फटी हुई,
क्या करें, भरोसा, ये उस पार लगा देंगे।
जो स्वयं कांपते हैं अपनी ही धड़कन से,
वो कैसे तूफानो से हमें बचा लेंगे—?
यह नाव न लड़ पायेगी, क्रूर थपेड़ो से,
जब तक इसका मल्लाह न बदला जायेगा।
यह नाव न छू पायेगी कभी किनारों को,
जब तक इसका यह पाल न बदला जायेगा।
कर रही संधियां लहरें गुप्त हवाओं से,
उद्वेलित करने, फिर से सागर के जल को।
चिनगियां भटकती हैं, पगली-सी इधर उधर,
बहका कर भड़काने फिर से बड़वानल को।
कसे पतवारें हैं मजबूत मगर इनके—
हाथो मे पहले था, वैसा अब जोश नही।
वो चट्टानो से हमे बचायेंगे कैसे—?
जिनको शराब मे खुद अपना ही होश नही।
यह नाव न लहरो का उर चीरेगी तब तक
जब तक इसका हर साज न बदला जायेगा।
यह नाव न छू पायेगी, कभी किनारो को
जब तक इसका यह पाल न बदला जायेगा।

१४ अगस्त ६६

पंडौसी को पत्र

भारत की इस आर्य धरा पर बढने वालो
खबरदार आगे बढना कुछ सोच समझ के
अब तक तो तुम इन परो से गिर पडते थे
आज तुम्हे इन पैरो पर अभिमान हो गया
अभी प्रगति के पथ पर तुम दो कदम चले हो
समझ लिया कैसे तुमने अभिमान हो गया
नास्तिक के साथी तुम कैलाशपति के
वक्षस्थल पर आगे बढना कुछ सोच समझ के
तुम अफीम मे ऊघ रहे थे भूल गये क्या ?
यह सारा ससार तुम्हे दुत्कार रहा था
मैने गले लगाया तो तुम फूट पडे थे
केवल पचशील तुमको पुचकार रहा था
मगर सुनो हम लोहे के हैं चने इसलिए
खाने को आगे बढना कुछ सोच समझ के
हमने तुमको मित्र समझ सम्मान दिया था
जब तुम भेदी बनकर इस घर मे आये थे
कहा गये वे गीत चीन के आदर्शों के
गाये थे तुमने जब तुम छलने आये थे
भारत का विश्वास उठ गया अब तुम पर से
औरो को छलना अब तुम कुछ सोच समझ के
जैसे हम आदर्श दोस्ती के कायल हैं
वैसी ही दुश्मनी निभानी भी आती है
जहा मित्रता पर हम जान निछावर करते
जान हथेली पर हमको रखनी आती है।
इसलिए दोस्त से दुश्मन ही यदि बनना हो तो
मोल दुश्मनी हमसे लेना सोच समझ के।

४ अक्तूबर ५९

चेतावनी

दु साहसी क अरे अधेरे तनिक ठहर तू
विश्वासो का सूय उदय होने वाला है।

भस्मासुर के सुनो वशजो कान खोलकर—
अब मेरे शिव को छलना ग्रासान नही है।
सीमा की सीता को छलने छद्मवेशियो—
मत आना अब पहले वाला राम नही है।

वफ हिमालय की अब ठण्डी नही, गर्म है
इतनी कि इसके कण कण म आग भरी है,
सागर की लहरें अब शात नही रहने को,
प्रतिकारो की अन्तस्तल मे ज्वाल उठी है।

अमर ज्योति यह बुझने वाली नही पतगे
तेरे पखो का विनाश हाने वाला है।

तुम मेरे बस शात रूप से ही परिचित हो।
जब मुझको प्रलयकर रूप दिखाना होगा।
अमृत की मनुहारें मेरी तुम्हें न भायीं
अब मुझको विप बरबस तुम्हें पिलाना होगा।
जहा क हैया की मीठी वसी बजती थी
रणभेरी के सग वहा अब बिगुल बजे।
तन, मन धन सवस्व समर्पित कर स्वदेश को
भारत के घर घर मे सनिक वीर सजेगा।

अभिशापित-अभिमान दम के दर्प ठहर तू
देवासुर सग्राम यहा होने वाला है।

अगर नही विश्वास खोल इतिहास देख लो
हर पत्थर हमसे टकराकर गल जाता है
जो भी काटा चुभा हमारे खाक हो गया
आकर हर तूफान यहा पर ढल जाता है ।

पापो के परिणाम भुगतने तनिक ठहर तू
तेरे घर मे महाप्रलय होने वाला है ।
दु साहसों के अरे अधेरे तनिक ठहर तू
विश्वासो का सूय उदय होने वाला है ।

मैं सिपाही हिन्द का हूं

मुल्क की तौहीन मैं बरदाश्त कर सकता नही।
दुश्मनो को देश मे मैं सहन कर सकता नही।
आजमा लेना सिपाही हिन्द का हू दुश्मनो,
बढ गया आगे तो पीछे हट कभी सकता नही।

जान को रख कर हथेली पर लडा करता हू मैं।
सामने शैतान हो तो भी अडा करता हू मैं।
रग दिया करता हू धरती दुश्मनो के खून से,
जब कभी दुश्मन की छाती पर चढा करता हू मैं।

उस समय बेशक सिकन्दर भी अडे तो तोड दू।
बाजुओ के दम पे मैं दुश्मन के लश्कर मोड दू।
मौत का क्या खौफ मुझको मैं सिपाही हिन्द का,
सर पे बाधे मैं कफन लडता हू जिन्दा मौत से।

गडगडा जब गरजती हर तोप हिन्दोस्तान की।
दुश्मनो की टोलियां हो ढेर उडती राख-सी।
हर सिपाही हिन्द का हुकार कर जब गरजता,
दूर कोसो तक नजर आती प्रलय की आग सी।

हम वतन के वास्ते बाजी लगा कर जान की।
है कसम हमको हमारे हिन्द के अभिमान की।
गर उठाई आख तो, हम मर मिटेंगे देश पर,
फख है हमको हमारे हिन्द के अभिमान पर।

७ जून १९६५

युद्ध-का देवता-, ?

मरने को तो मरे सभी, पर ऐसी मौत नही आती है।

बेशक जो, अपनी माता का,
इकलौता हो बेटा प्यारा
चाहे अपने वृद्ध पिता की
आखो का हो एक सितारा

चाहे छोटी बहन वधु बन
उस घर से जाने वाली हो
चाहे भाई की जल्दी हो
शादी घर होने वाली हो-

अथवा चन्दा सी पत्नी जो
अभी अभी गौना कर आयी
अपने पूज्य देवता को जो
अच्छी तरह देख ना पायी

पर आवाज देश की सुनकर
घर के रिश्ते सभी भुलाता
इतना रहता याद उसे
चल सैनिक तुमको देश बुलाता

और सभी, को छोड, देश की -
सीमाओ पर वह आ जाता
जूझ दुश्मन से रण म वह
वीरोचित कर्त्तव्य निभाता

उसे नही परवाह भूख की
उसको नही प्यास की इच्छा
इतना रहता याद उसे कि
सैनिक तेरी आज परीक्षा

आज युद्ध मे चाहे उसका—
सारा तन छलनी बन जाये
पर दुश्मन को देख सिंह-सा
वो गरजे हुकार लगाये।

वो देखो उस ओर गया वह
जिधर दुश्मनो की टोली है
हथगोलो की फेर जला दी
दुश्मन की जिसने होली है

भीमकाय पेटन टंको को
बडे गर्व से जिसने तोडा
दुश्मन के बम्बार लड़ाकू,
ज्यों कागज का पून मरोडा

तिल तिल भर जमीन के खातिर
आगे बढता खून बहाता
घायल है फिर भी दुश्मन से
कभी नही दिल मे घबराता

आज मृत्यु भी आ जाये तो
उससे भी वो करे लडायी
दुश्मन के सीने मे जिसने
आगे बढ सगीन गडाई

भारत का यह वीर अकेला
उधर सैकडो खडे सिपाही
उसे अकेला देख, दुश्मनो की
सेना आगे बढ आयी

अटटहास कर, बढा, दौडकर
एक तोप का गोला फेंका
लाशें बिछी सैकडो दुश्मन—
की उसने आखो से देखा

बोल उठा जय मातृभूमि हे !
मैंने अपना फर्ज निभाया।
अब जाये तो जा सकती है,
यह माटी की मेरी काया।

इसका मोह नहीं है मुझको
आज नहीं तो कल जायेगी
मरू देश के लिए घड़ी यह
जाने कब फिर से आयेगी

नमस्कार है जन्मभूमि को
जिसने मुझको जन्म दिया है
नमस्कार हर खेत खेल को
जिसने मुझको बड़ा किया है

नमस्कार है तुम्हें हिमालय
नमस्कार गंगा के जल को
नमस्कार मेरे भारत की
पावन माटी के कण कण को

अगर मिलेगा जन्म, लौटकर—
इसी धरा पर फिर आऊंगा
मेरे प्यारे देश तुम्हें मैं
सचमुच भूल न पाऊंगा।

इतना कह सो गया धरा पर
वहीं तभी लोहू की धारा
अब निश्चल था अजर अमर वह
जननी जन्मभूमि का प्यारा

ऐसे वीरों की गाथाएं घर घर रोज सुनी जाती हैं।
मरने को तो मरे सभी पर ऐसी मौत नहीं आती है।

दुनिया का बाजार

दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जो ले लो

दुनिया मे बाजार आपने
देखे होगे कई तरह के
माल जहां बेचा करते हैं
सेठ दलालो के बूते पे।
बात-बात मे कसम राम
भगवान धम की खाया करते
और दलाली के कारण
कुछ लोग खडे ठगवाया करते।
आये दिन इनको मिल जाते
भूले भटके ग्राहक ऐसे,
चमकीला कुछ तडक भडक का
माल दिखा ठग लेते पैसे।
यह कह करके कि सस्ता, सुदर माल टिकाऊ है जो ले लो,
दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जो ले लो।

है मन्दिर मे भगवान बिकाऊ
मस्जिद मे हजरत बिकते हैं
चर्चो मे सूली पर ईसा,
पोपो के हाथो बिकते हैं।
ले लो बाबू स्वर्ग मिलेगा
खुदा खरीदो सुख पाओगे,
ईसू क अनुयायी बनकर
सीधे जन्नत मे जाओगे।
माल एक-सा बेच रहे हैं,
लेकिन लेबल ट्रेड मार्का
तीनो के ही अलग अलग हैं,
मन्दिर, मस्जिद, चर्च मार्का

माल किफायत से दे देंगे, सभी कह रहे हम से ले लो
दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जो ले लो

दुनिया कहती इसे कचहरी,
मैं कहता हू मारकेट है
सील बंद सरकारी लेबल,
मु हमांगी ही फिक्स रेट है ।
यह धमराज की है दुकान,,
इन्साफ यहा पर बिकता है,
चादी के टुकडो के ऊपर,
ईमान यहा पर बिकता है ।
हो पास आपके चादी के या
नोट नक्द दे सकते हो
तो बेशक कर दो खून, यहा
तक फासी से बच सकते हो ।
या जोरू, जर लो छीन किसी
का घर फाडो डाका डालो
हो पैसा पास तुम्हारे तो,
जिन्दा इन्सान जला डालो ।
पड जाय जरूरत मौके पर तो गवाह बिकाऊ है जो ले लो
दुनिया का बाजार खुला, हर चीज बिकाऊ है जो ले लो

तुम क्या जानो यह कलियुग है,
हर माल लेबलो पर बिकता
हर दुकानदार अपनी चीजें
लेबल चिपका बेचा करता
बैलो की जोडी के लेबल,
बापू के चेले बेच रहे
जन-तत्र मार्का माल सभी
कम्पीटीशन पर बेच रहे
इसका हाथी, उसका घोडा
यह खडा शेर मतवाला है

है कही झोपडी छाप माल
तो कही दीपको वाला है
सब ओर दुकाने खुली हुई
प्रोपेग डे का जोर यहा
बस अपना माल बेचने को
हर नेता करता शोर यहा
खद्दर के कपडो मे लिपटे, ये कौन विकाऊ हैं जी ले लो।
दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जी ले लो।

वह चला गया युग जब
लडका लडकी को लडकी लडके को
चुनती थी भरे स्वयवर मे
जीवन साथी कर लेने को।
लेकिन अब तो देखो शादी,
तकडी पर तुल कर होती है
शादी से पहले लेन देन की
रस्म अदायी होती है।
काने खोड, लूले, लगडों के
ऐब देखता कौन यहा
बकरी सी बिक जाती बेटी
पर दुनिया रहती मौन यहा
पैसे के बल पर सूरदास को
मृगनयनी मिल सकती है।
मरघट पर लेटे बूढो की
बारात यहा सज सकती है।
यह कह कर के कि लडका, सुदर, स्वस्थ कमाऊ है जी ले लो।
दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जी ले लो।

जून ५८

ढोंग

कुछ मुझे कहते तुम्हारे मंदिरों में ढोंग है।
कुछ बताते कि ये सारी मस्जिदें भी ढोंग हैं।
पूछता हूँ मैं उन्हें इतना बता दें वे मुझे—
कौन सी इन्सान की करतूत अब बे-ढोंग है॥

लीडराने इस जमाने की सभी बातें हैं ढोंग
हर बड़े लीडर की तकरीरें सभी झूठी हैं ढोंग।
खद्दरानी चद्दरें ये टोपियां भी ढोंग हैं
और तो अब क्या कहें, जब जेल जाना ढोंग है॥

था कभी भाषण या अब उद्घाटनों का जोर है।
हर तरफ कैंची से फीता काटने का शोर है।
योजना की सब रकम ये कंचियां यूं खा रहीं
इसलिये इस देश का उत्थान सारा ढोंग है॥

ये बड़े जलसे सभाएं ये नुमायश भी है ढोंग।
हर बड़े लीडर को बाहर से बलाना भी है ढोंग।
मंच पर माला गले में डालना ये तालियां
सच मुझे पूछो तो सारा है दिखावा ढोंग है॥

ढोंग खाने में खिलाने में पिलाने में है ढोंग।
ढोंग कपड़ा पहनने में, सादगी रखने में ढोंग।
है वही काबिल जमाने में जो करता ढोंग है।
आजकल की जिंदगी का हर पहलू ढोंग है॥

पेशा कवियों के बढ़ाना दाढ़ियां रखना है ढोंग।
मंच पर नखरे दिखाना, बिगड़ जाना भी है ढोंग।
लोग मुझको भी कवि कहते हैं सो अब क्या कहूँ,
वरना कहता हर कवि की हर नजाकत ढोंग है॥

नवम्बर '६२

कवि बनने का फार्मूला

बनना हो कविराज तुम्हे तो मत धरती के गीत बनाओ
आज जानती हमे नही है,
धरती के अन्तर की पीडा।
आज जानती नही किसी को,
ऊषा सध्या की नभ क्रीडा।
छायावादी छोड सखे ! अब
भंम भारती लिखो कविता।
लिखना ही हो काव्य तुम्हे तो, फिल्मो के बस गीत बनाओ।
बनना हो कविराज तुम्हे तो मत धरती के गीत बनाओ ॥
तुम्ही सोचो जहा 'डालडे'—
पर केवल मानव जीना हो।
मक्खन मिश्री दूध छोड जो—
मिल्क अमेरिकन पीता हो।
वो समझेगा क्या खाक ? वेद के
भेदभरी भगवद् गीता को।
विनय पत्रिका छोड सखे ! तुम प्रणय प्रीत की रीत बताओ।
बनना हो कविराज तुम्हे ; तो मत धरती के गीत बनाओ ॥
नुस्खा मेरा अव्वल, इसको—
लिख लो, यदि हो नाम कमाना
तो कविराज शुरू कर दो तुम
लम्बे लम्बे बाल बढाना।
और—हमेशा पहनो प्रिय तुम
खद्दर का कुर्ता पाजामा
कवि सम्मेलन म जाने से पहले घर पर अपना राग जमाओ।
बनना हो कविराज तुम्हे तो मत धरती के गीत बनाओ ॥
मीरा के पद कौन सुनेगा—
छोडो भी ये राग पुरान
आज 'लता' पर लट्टू होकर

झूम रहे सारे श्रोता।
और—लता मङ्गेशकर रही थ
घर घर गाये जाते गाने
इसीलिए तुम तानसेन बन लोकगीत सरगम पर गाओ।
बनना हो कविराज तुम्हें तो मत धरती के गीत बनाओ॥
पर कुछ रहा मत लिखना
भारत और भारती गाथो
''जन भारती' परिपाटी इस
युग पर छाप जमाता जाती
आज सिनेमा से चलकर मगु
गाना या पाठ्य बिक जाती
पढ़ना हो यदि महाकाव्य तो "फिल्म फेयर" अखबार मंगाओ।
बनना हो कविराज तुम्हें तो मत धरती के गीत बनाओ॥
है धनी यहाँ जो पर ह —
पर ही लाखों रुपये बरसाते।
भूषण और बिहारी सारे
राजाओं पर मौज उड़ाते।
आज चाय के प्याले पर, ये
कविगण बोसा तक आ जाते।
कुछ तिकडम से काम करो तुम नया घसीटावाद चलाओ।
बनना हो कविराज तुम्हें तो मत धरती के गीत बनाओ॥
मंचों पर मजनूँ बन करके
सीना तुम थोड़ा लहराना।
कुछ मस्ती में झूम झूम कर
गला फाड कर गीत सुनाना
तेली के सिर पर कोल्हू या
खाट खाट की तुकें मिलाना
तुम्हें तुकों से मतलब क्या? तुम गद्य गीत ही लिखते जाओ।
बनना हो कविराज तुम्हें तो मत धरती के गीत बनाओ॥

माघ '५९

कुछ पैरोडीज

[१]

अब मोहि, भीजत क्यों न उबारो।
ओ मेरे मुन्ना की माता, घर को खोल किवारो।
सत्यानाश हुयो जूतन को, भीज्यो सूट हमारो।
घुटनन तक, जल बहत सड़क पर फुट व्है बहत पनारो।
ऐसी नींद भई का तुम्हरी अब तो दया विचारो।
फाटक खोल देख आ बाहिर भीजत पति तुम्हारो।
एहि अवसर अकुलाई उठि वह बोली 'ठहरो आवहु"।
कह्यो न मान्यो "अरुण" रात में फेर सिनेमा जावहु।

[२]

अबकी पास करहु भगवान।
सब कहते हम फेल होयगे, निज निज मीना तान।
मम्मी तो कछु कहियें नाही, डैडी हरि हैं प्राण।
देखि रिजल्ट लताड़न की प्रभु है अकिल में बान।
कबहु न पुस्तक हाथ लई हौं, जानत सकल जहान।
सूरदास गुण कह लग अपने, बरनौं कृपा निधान।

[३]

कहा लौ कहिये पति की बात।
सुनहु सखि कबहुन लै हमको सग सिनेमा जात।
हौं चाहति सलवार रेशमी वे साड़ी ले आत।
पाऊडर-क्रीम लिपस्टिक, सैंडल नेकुन उन्हीं सुहात।
अपने दुई कुर्ता दुई धोती सूट न कबहु सिलावे।
सैकिंड हैंड लगत दुल्हा वे, जब हमसे बतियावे।
चार बार तुलसी के दोहा, रटि रटि मोहि सुनावे।
मेरो पति हैं तबहि 'अरुण" जब इंगलिस पोइम गावे।

सीता, सावित्री, अनसूईया,
तुम गई यहा झासी वाली।
रावण, दुर्योधन पग पग पर,
वो लूट रहा फिर डलहोजी।

समझा नारी ना रही यहा,
नारी अब नही अनाडी है।
मृत्यु सन्निकट आर्यों की,
अनियमित चलती नाडी है।

देवी, थी, पर अब चित्र सिर्फ
मुंह मागे, वर हमने पाये।
लेडी हो, लेट गई वामी
वूमन बन हो गई, वमन-गत।

वह रौद्र रूप है कहा भला,
जब असुर मदनी नाची थी।
हा! वही भवानी नाच रही
क्लबो मे बुरस नर्तकी सी।

हो गया समय अब जाग जाग,
भारत की भाग्य विधाता है।
सुसुप्त नीद कर परित्याग
कर्त्तव्य जगाने आया है।

भृकुटी टढी कर अरुण नयन,
रणचण्डी बन कर मतवाली।
कर खडग खप्र कर प्रलय उधर,
भारत पर जिनकी क्रूर दृष्टि।
हे खड्गपाणी रिपु कर सहार
तव चरणो मे मम नमस्कार।

मई '५५

कलम की नोक

चप्पुओ से लोग किश्ती हाकते होंगे,
अगुलियो के इशारो से मैं किश्ती हाक लेता हू
बडापन पत्थरो का है मुझे मालूम लेकिन मैं—
कलम की नोक से फौलाद का भी तोड सकता हू ।

कलम मेरी कलम, शमशीर है, अमृत, जहर भी है ।
जरूरत के मुताबिक मैं इसी से काम लेता हू ।
अधिक ऊचे सिरो को नोक से नीचा झुकाकर मैं,
झुके सिर, लटखडातो का, मैं दामन थाम लेता हू ।

कलम वालो ! कलम की नोक बनाये रखना,
चिकना कागज है मानता हू चलाये रखना ।
हर्गिज यह नोक न टूटी ह न कभी टूटेगी
शत नापाक के हाथो से बचाये रखना ॥

पाच मुक्तक

मत मुझे समझना कवि यही मेरे साथी।
मैं कागज पर बस, शब्द बिछाया करता हूं।
उन शब्दो की रेखाओ से कुछ चित्र बना
मैं अपना आहत उर बहलाया करता हूं।

मैं रहता हूं तुम सबकी दुनिया मे लेकिन—
सतोष नही, मेरे दिल को, इस दुनिया से।
इसलिए काव्य की नाव बना करके उस पर—
अपने दिल को उस पार लगाया करता हूं।

मेरी आखें इतिहास पढा करती हैं तो—
मस्तिष्क कहा करता "मुझको विश्वास नही'
तब मैं उसको अपना इतिहास सुना करके—
अपने बीते दिन याद दिलाया करता हूं।

थकने को तो हू, थके हुए ये पर मगर—
क्या करू ? विवश हू, मेरी मजिल पास नही।
जब पैर ठिठक जाते है, पथ पर आकर तो—
मैं गाकर अपने गीत, बढाया करता हूं।

मै ऊपर से हू शात मगर मेरे उर की—
खिडकी से देखो भाक, धधकती है होली।
जब प्रलय अनल सी आग धधकने लगती तो—
दो बूद दृगो से डाल बुझाया करता हूं।

शरद् का चाँद

शरद् के चाद
अवसाद के सागर मे
क्यो डूबे हो आज ?
पराजय स्वीकारना
मन भूलो—पाप है
भीरुता—जीवन का
बहुत बडा—शाप है
विचरो—निस्संशय
पी लो—इस नभ के—
समूचे तम को
क्योंकि यह—सत्य है
उजाला—अधेरे से
आज तक हारा नही है
क्योंकि एक दिन
श्वेत होगा
यह अमित आकाश
और—यह पकिल
मिटेगी रात।
शरद् चाद !
तुम अभय हो
चमको—सम्पूर्ण ऐश्वर्य के साथ।

अभ्यर्थना

अपनी अतृप्त इच्छाओं की
पूर्ति के लिए—
इन निर्मम
पत्थरों के सामने
मैंने
अर्चना
अभ्यर्थना
कभी भी नहीं की।
क्योंकि—मैं जानता हूं
इन पाषाणों का अभ्यन्तर
कभी नहीं पिघलता।
इन पर मैंने
अंजलि भर जल
कभी नहीं चढ़ाया
क्योंकि—इनकी आंखें
कभी भी गीली तक न हुईं
न जाने क्यों ?
बिना हिले
बिना डुले
फटी फटी आंखों से
देखते रहते हैं
ये पत्थर।

एक प्रश्न एक उत्तर

मेरे सम्मुख खडा है
अनघडे पत्थरो की छाती पर
एक वयोवृद्ध खण्डहर
और—एक भव्य भवन
दोनो के मध्य
फूत्कारता फणियर साप सा
एक प्रश्नचि ह
प्रथम—मेरे इतिहास की
अनेक घटनाओ का साक्षी
दूसरा—वर्तमान युग का
दीप्तियुक्त एक दर्पण
किस की श्रेष्ठता स्वीकारू ?
किसे हेय मानू ?
सुनता हू—
सब कुछ ठीक है' जो नया है
'कुछ भी नही है' जो पुराना है
इस मानू भी तो
आज हम, जो कुछ सचित कर रहे हैं
भावी पीढी को सौंपने
क्या वह व्यर्थ नही होगा
हमारा वर्तमान
पहचाना जायेगा
अतीत के सम्बोधन से
उनके लिए
क्या 'वह'
कुछ नही होगा ?
इसलिए मुझे
इन भव्य भवनो क साथ साथ
खण्डहरो की श्रेष्ठता स्वीकार है।'

निर्मिति

ये रग
लाल, हरे, पीले
कुछ सूखे—कुछ गीले
रग की पेटी मे
सुकुमार शिशुओ से
देखो ! जो लेटे हैं
तूलिका इनकी मा है
इसी के ये बेटे हैं

× × ×

जब जब यह इन्हें
चाटती है—चूमती है
वात्सल्य से विह्वल हो
स्वय को इनमे खो
तब तब
दिवारो पर टग
केनवास पर
कोई न कोई चित्र—
अवश्य उभरता है
कहने को हम इसे
आर्ट कहे
कला कहे
कुछ भी कह सकते है।

बौना हो गया हूं

किसी अपराध थोपे गये
निर्दोष अपराधी सा
जब जब मैं
खड़ा पाता हूं अपने आपको
किसी चमकदार चौड़ी मेज के पास
तो मुझे ऐसा लगता है—
कि यकायक मैं बहुत बौना हो गया हूं
या किसी विदेशी भाषा की संज्ञा का—
केवल शब्द मात्र हूं
जिसे अभी अभी
किसी अड़ियल पैन की निब से काट कर
अर्थहीन सकर्मक क्रिया—किया गया हो
मैं मौन हूं
कुछ-कुछ इस प्रकार अनुभव करता हूं
जैसे किसी हारे हुए जुआरी को देखकर
उसके तथाकथित मित्रों ने कहकहे लगाये हों
चाहता हूं इन औपचारिकताओं के घोल से पुते कमरे
इन मेजों और कुर्सियों के भद्दे सायों से
कहीं बहुत दूर—चला जाऊं
किन्तु फिर सोचता हूं कि
कलेण्डर में अंकित संख्याओं में
पहले से ही बहुत फासला है।

तुम और हम

ओ हमारे स्वगस्थ पुरखो !
आज हम
तुम लोगो से
बहुत आगे है ।
क्योंकि—
हमने अपनी जीभ की जगह—
फिट कर ली है—
सरकस के तार पर चलने वाली
लडकिया ।
और
सदर्भों के छाते थमाकर
हमने, उ हे साध लिया है ।
सुन कर तुम्हे अचभा होगा—
कि
हमने अपने हाथो को तोड कर
भर लिया है, अपने ही सिरो मे,
और
अब हमारी आखो म
पुतलियो के नाम पर
शेष रह गये हैं
पश्चिमी बोतलो के
उधार लिए
चद टुकडे ।

प्रवचना

कभी-कभी जाने—
ऐसा क्यो लगता है ?
कि, राष्ट्र के मंदिर के चारो ओर
बहते
पतित प्रवृतियो के
इन भ्रष्टाचारी नालो के अजगरी मुख
जब तक नही होंगे बंद
तब तक
भोली आस्थाएं—निर्दोष मान्यताए
पुनर्जीवित नही होंगी
क्योंकि यह परामुखापेक्षी पाखण्ड
जाला बुनने मे—मछलियां तकने मे
मन मैले बगुलो
निदयी मकडियो से
अधिक कुशल है
इसलिए मुझे भय है
कही ? इस बार भी
बेचारा सत्य
मिथ्या के हाथो
छल लिया न जावे ।

अक्षर अक्षर की कतरन

मैंने अपने निजी वक्ष मे इन्द्रायण को
लम्बा करके बिछा लिया है
जिसकी—सभा पारदर्शी ऊची दीवारें
अन्दर बाहर जैसा है—वैसा दिखता है
जिन पर बूढी स्मृतियो के चित्र टगे जा
अलग-अलग सब आकृतियो के
चाहे उलट पलट कर देखू
आडा ओंधा
चाहे पलट-पलट कर देखू
सब मे मुझ को अपना ही चेहरा दिखता है
और इधर
अक्षर अक्षर की यह कतरन है
बहुत बार जोडा इनको—कि शब्द बनेगा
लेकिन वे हर बार ट्ठ के ट्ठ
व्यथ सब मेहनत मेरी
बहुत बार झु झलाहट आयी
फिर समझाया अपने मन को
शब्दो का अपन म कुछ अस्तित्व नही है
मिलने के पहले अक्षर थे
मिलने के पीछे अक्षर हैं
इसी अथ न
मुझको नूतन ज म दिया है।

चीन से

चीनी मिट्टी के बतनो !
मानता हू
तुम्हारा दूधिया रग,
किनारो की सुनहरी बॉडर,
बेल-बूटो के डिजाइन
ग्राहक को
अपनी ओर खीच लेते है।
क्योकि—तुम्हारे भीतर के—
खुरदरेपन को
उभरने जो नही देती
नियन्त्रण रूपी ग्लेज की पालिश
वैसे तुम आज—
सोने, चादी तावे और
पीतल के बतनो की अपेक्षा
अधिक ही बिकने हो
सस्ते जो हो।
चीनी मिट्टी के बतनो !
इसे तुम भी मानोगे
—जहा तुम जाते हो।
पहले-महल सम्मान पा जाते हो
पर न जाने क्यो ? हर घर म
सोने,चादी,तावे के बतनो की तरह
सच है न ?
अधिक दिनो तक तुम टिक नही पाते हो।

कृतघ्नता

मेरे घर के पास वाला
एक नाला
जन्म जिसका
जानते हैं सब
मेरी ही भुजाओं से हुआ है।
इसलिए कि
तारकोली रंग का अवरुद्ध पानी
मुक्ति पा, आजाद होकर
बेचारा बह सकेगा।
किन्तु वह कृतघ्न
द्वार पर मेरे ही
कुत्सित इरादे लिए खड़ा हुआ है
भेजता है, मच्छरों को
उल्टा मेरे ही घर
ताकि वे मच्छर
फैला सकें, नये नये रोग।
छोड़ दें घर को ऊब कर लोग।
जिससे घर को लील सके
यह दुष्ट नाला।
परन्तु यह नहीं जानता कि—
ये सभी कमरे
जिन्हें मैंने सजाया है, संवारा है
यहां का चप्पा चप्पा
मुझे अपने प्राणों से भी प्यारा है।

अधर की स्थिति

बीमार दीवारों ने
कच्चे धागों में पिरोकर
लटका दी हैं—हमारी सभी छतें
तकड़ियों पर तोल कर
बेच चुकी हैं
वे अपने कंधों का निहित बल
अततोगत्वा
अधर की यह स्थिति
और इसके संभावित परिणाम
तोलना चाहेंगे
अवश्य ही किसी दिन
हमारा—
भूत
भविष्य
वर्तमान ।

इलैक्शन

कितना ढीठ है, यह कोलाहल ?
किसी प्रवञ्ची भिक्षुक सा
लौट कर, लो फिर आ गया है
गली गली, द्वार-द्वार
खिड़कियों से फेंके गए बासी रंग
ओढ़ लिए हैं इसने अपने शरीर पर
चीखता इधर उधर
भागता इधर उधर
कितना वाचाल है यह कोलाहल ?
बोलियाँ—एक वक्ता
अनेक बोलता है एक साथ
हिला हाथ
जिनके अर्थ
किसी टूटे साइन बोर्ड के अक्षरों की तरह
घिसे पिटे
कटे फटे
बिल्कुल अस्पष्ट।
कितना बहुरूपिया है यह कोलाहल ?
इसके लिए 'आर्ट' माने
केवल—'पैसा है'
इसका नकली लहू
हू ब हू असली जैसा है
इसीलिए भरता है यह—
देवी देवताओं
पीरों पैगम्बरों
साधुओं संतों को
पलट-पलट सभी स्वांग
कितना अजीब है यह कोलाहल ?